ज्ञानामृत
अगस्त, 1986 वर्ष 22 ❋ अंक 2 मूल्य 1.50

ईश्वरीय सन्देश

रक्षा बन्धन पर

मेरे प्यारे भाई ! राखी की शुभ बधाई !

यह राखी है निराली बहन-भाई का यह नाता
रक्षा करने वाली। पवित्रता मन में लाता ।
है यह शुभ प्रतीक रक्षा का यही आधार
सन्देश इसका सटीक इसी से सुख अपार ।
"विकारों को लो जीत राखी का त्योहार
करो प्रभु से प्रीत।" ये सूती-रेशमी तार
योग से मिटता तनाव। कहते बारम्बार
अशान्ति से होय बचाव। लिये बहन का प्यार ।
निर्विकार निर्मल स्वभाव राखी पवित्रता का प्रतीक
होत न मन-मुटाव । विकारों को लो जीत
प्रभु का उस पर हाथ हे आत्मा के भाई ।
रखता प्रभु को जो साथ राखी की शुभ बधाई

आपकी बहन

उस्मानाबाद: महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शंकरराव चव्हाण जी के उस्मानाबाद में पधारने पर ब्र.कु. प्रमिला उन्हें ईश्वरीय संदेश सुनाने के पश्चात् श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए ।

आबू पर्वत: पाण्डव भवन में ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी राजस्थान के सिंचाई मंत्री भ्राता दामोदर आचार्य जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ।

आबू पर्वत: पाण्डव भवन में राजस्थान के शिक्षा एवं स्वास्थ्य मंत्री भ्राता हीरालाल जी देवपुरा से ज्ञान वार्तालाप करती हुई ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी ।

आबू पर्वत: पाण्डव भवन के प्रांगण में उड़ीसा के वन राज्य मंत्री भ्राता गोपालचंद जी महापात्र वृक्षारोपण करते हुए ।

आबू पर्वत: ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी पाण्डव भवन में देश के भिन्न-भिन्न भागों से पधारे । लोकसभा सदस्यों से भेंट करते हुए ।

जलगांव: में ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहिनी जी सभा में उपस्थित जनता को राजयोग की व्याख्या करते हुए ।

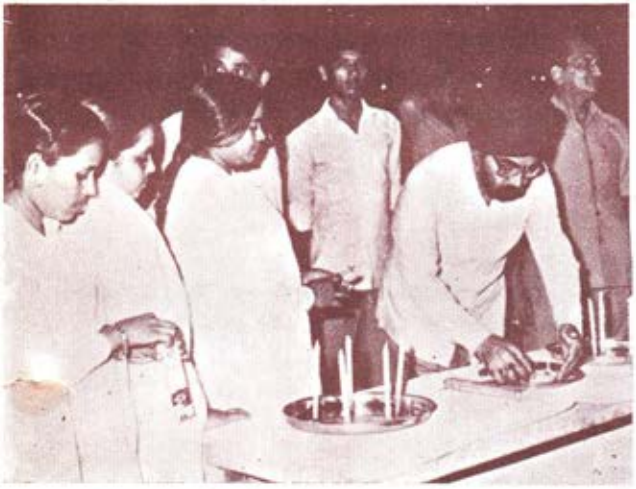

ग्वालियर: मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश भ्राता डॉ. टी.एन. सिंह जी, स्वर्ण जयंति समारोह में सर्व धर्म सम्मेलन का उद्घाटन करते समय उनके साथ जैन समाज के अध्यक्ष तथा रोटरी-क्लब के अध्यक्ष डॉ. निर्मल कुमार जैन तथा सनातन धर्म मंडल के अध्यक्ष भ्राता आनन्द बिहारी जी एवं अवधेश बहन ।

दुर्ग में विश्वशांति आध्यात्मिक सम्मेलन में (दाएं से) डॉ. सोमनाथ साहू, भजनसिंह निरंकारी, ब्र.कु. ओमप्रकाश, ब्र.कु. कमला तथा उषा बहिन ।

मॉरीशीयस: कुकपाइप में हुई 'शांति विस्फोट' प्रदर्शनी का उद्घाटन करने पश्चात् महापौर भ्राता जे. सीनयन अपने विचार लिखते हुए ।

मैसूर: हुणसूर सेवाकेन्द्र पर स्वर्ण जयंति समारोह में न्यायमूर्ति संगलद जी अपने उद्गार प्रकट करते हुए ।

Regd No.10563/65-D(E)-70

ओमशान्ति भवन–आबू पर्वत पर हुए 'व्यक्तित्व निर्माण' गोष्टी के अवसर पर मंच पर (दाएं से) ब्र. कु. मृत्युञ्जय, ब्र. कु. जगंदीश चन्द्र जी, ब्र कु. दादी प्रकाशमणि जी, उड़ीसा के वन राज्य मंत्री भ्राता भोपाल चन्द्र मोहपात्रा, जयपुर से विधानसभा सदस्य तथा ब्र. कु. निरुपमा जी।

इन्दौर- स्थित ओमशांति भवन में संगोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्रह्माकुमार रमेश शाह, साथ में सहायक कमिश्नर आयकर विभाग भ्राता वी.के. वेनीवाल जी बैठे हुए हैं।

वेरावल सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित स्वर्णयुग आध्यात्मिक मेले में राजयोग शिविर का उद्घाटन गुजरात के कृषि ग्राम विकास मन्त्री भ्राता महंत विजयदास तथा वैष्णवों के महाराज १०८ श्री चंद्रमाणजी मुरलीधर जी कर रहे हैं।

मेरठ सेवाकेन्द पर हुए स्नेह मिलन में गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता ए. एस. कुरैशी जी अपने उद्गार प्रगट करते हुए।

अमृत सूची

१.	शान्ति के लिए एक मिनिट योगदान की अपील	१
२.	गति और प्रगति मंद क्यों? (सम्पादकीय)	२
३.	अब फिर बजेगी वह सुख चैन की बाँसुरी	४
४.	तपस्या में बाधक सूक्ष्म कामनाएं और दुर्भावनाएं	५
५.	स्वर्णिम युग कल्पना या यथार्थ	८
६.	रक्षा बंधन (गीत)	८
७.	नया और विचित्र रक्षा बन्धन	११
८.	आरोग्य और आहार	१४
९.	जगत् की स्वप्नमात्रता	१६
१०.	है प्रेम जगत में सार	१९
११.	सहज ज्ञान तथा राजयोग द्वारा सच्चे स्वराज्य की प्राप्ति	२१
१२.	हम देवी देवता बनेंगे	२३
१३.	पवित्र बन, योगी बन, मां भारती पुकारती	२५
१४.	अहंकार	२८
१५.	कटाक्ष	२९
१६.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३०
१७.	भगवान कब आते हैं (कविता)	३२

प्रेस विज्ञप्ति

शान्ति के लिए एक मिनिट योगदान देने की अपील

विश्व-शान्ति के लिये एक नया अभियान

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने विश्व-शान्ति के लिये एक नये ढंग का अभियान आयोजित किया है जिसे उन्होंने नाम दिया है-"शान्ति के लिये एक मिनिट का योगदान"।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह है कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित अन्तराष्ट्रीय वर्ष-1986 को सामने रखते हुए अधिकाधिक जन-समुदाय और व्यक्ति शान्ति-कार्य में भाग ले सकें और हर कोई शान्ति की स्थापना के लिये अपना उत्तरादायित्व समझते हुए इसमें शान्ति का कुछ योगदान दें।

"एक मिनिट शान्ति दान" का यह कार्यक्रम लगभग 48 देशों में 16 सितम्बर से 16 अक्तूबर, 1986 तक चलेगा। इनमें से हरेक में ब्रह्माकुमारियों की विश्व के नेताओं के साथ जो समितियां बनी हैं, उन्होंने अपील की है कि आयु वर्ग आदि के भेद के बिना, हर व्यक्ति या हर संस्था संगठित रूप से, उस एक मास के दौरान, प्रतिदिन कम-से-कम एक मिनिट ईश्वरीय स्मृति (योग) में स्थित होकर या शुभ विचार (पोजटिव थाट्स) मन में लाकर विश्व- शान्ति की प्राप्ति के लिये योग-दान दें। सभी से यह भी प्रस्ताव किया गया है कि अन्य लोगों से अपने घृणा, जोकि अशांति और लड़ाई का मूल है, का अन्त हो। इस अपील में न तो कोई धन दान के लिये कहा गया है न इसका उद्देश्य है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय-विश्व-विद्यालय अन्य शान्ति-प्रिय संस्थाओं और विशिष्टि व्यक्तियों के साथ मिलकर 16 सितम्बर को उक्त 48 देशों में इस अभियान का प्रारम्भ घोषित करेगा। इसके लिये कई महीनों से तीव्र-गति से तैयारी की जा रही है।

शान्ति के लिये इस अभियान या अपील के कई विश्व-विख्यात व्यक्तियों के नाम संरक्षकों के तौर पर जुड़े हैं। मदर टेरेसा और दलाई लामा ने भी इस कार्यक्रम में अपनी रूचि प्रदर्शित की है। उनके अतिरिक्त इसके संरक्षकों में अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग, के प्रधान न्यायाधीश नागेन्द्र सिंह, इग्लैंड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री और वर्तमान पार्लियामेंट के सदस्य जेम्स कालधन, केनिया के संग्रहालयों के डायेरक्टर और प्रसिद्ध शोधकर्ता रिचर्ड लीकी, नोबल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर ब्रयान जोजसन, इंग्लैंड में गांधी फाउन्डेशन और यूनाइटिड नेशनस् एसोसिएशन के प्रधान लार्ड एनल्स, संयुक्त राष्ट्र संघ के सहायक महासचिव जेम्स जोनाह, आस्ट्रेलिया में उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के एंडर्नी आदि हैं। ख्याति-प्राप्त गायक, संगीतज्ञ अभिनायक आदि, जिनमें गांधी फिल्म में महात्मा—गांधी का रोल अदा करने वाले बेन किंगजले, येहूदी मेनुहिन, पाल मैक्कार्टनी, जोनधन मिल्लर आदि भी इस कार्यक्रम में सहयोगी हैं। अनेकानेक प्रसिद्ध लेखक और लेखिकाएं, जिनमें उरसुला बर्टन, एलन अइकबोर्न आदि हैं, भी इनमें सहयोगी हैं।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(सम्पादकीय)

गति और प्रगति मंद क्यों ?

जीवन एक यात्रा है; हरेक को अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचने का ध्यान तो रखना ही चाहिये। दूसरे शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि हरेक को अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये तदानुसार लक्षण तो धारण करने ही चाहियें अथवा वाञ्छित सिद्धि प्राप्त करने या सिद्धि स्वरुप बनने के लिये हरेक को साधना तो करनी ही चाहिये। **जब संसार में अनगिनत उपलब्धियों को एक ओर रख कर योगी ही बनने का किसी ने व्रत लिया हो तो उसे योग की सूक्ष्मता, गहराई, ऊँचाई या सिद्धि तक पहुँचने का पूरा यत्न तो करना ही चाहिये। आधा मर कर काम करने से क्या लाभ ? उत्साह और उमंग ही यदि साथ न रहें तो एक किलो वज़न भी एक क्विंटल मासूस होता है। अतः परिस्थितियों से जूझ पड़ना ही वीरता है और कमर कस काम करने में ही सफलता है।**

योग से जो लाभ होते हैं, उनकी यदि सूची बनाने बैठें तो सम्भव भी नहीं होगा कि हम सूची बना पायें। इसकी बजाय ऐसा ही क्यों न कहें कि "कोई ऐसी श्रेष्ठ प्राप्ति है ही नहीं जो योगी जीवन से प्राप्त न होती हो।" जो प्रारब्ध बनती है वह तो अनुपम होती ही है परन्तु वर्तमान में योग की स्थिति से जो उपलब्धियाँ होती हैं, वे भी तो गूंगे को गुड़ के समान अवर्णनीय होती हैं।

गति मंद क्यों ?

परन्तु यह सब जानते हुए भी योगी अपने पथ पर चलते-चलते स्वलप ही प्रगति क्यों कर पाता है ? उसकी गति मन्द क्यों हो जाती है ? अपार प्राप्ति के मार्ग से हट कर वह रुक क्यों जाता है ? वह कभी-कभी पीछे क्यों हटने लग जाता है ? योगी जीवन का जो श्रेष्ठ और रसीला अनुभव है, उसकी कमी क्यों मासूस करने लगता है ? प्रभु की ओर बढ़ते-बढ़ते वह मार्ग खो क्यों बैठता है ? यह तो एक अथाह हानि हो जाती है। **पुरुषार्थी अपने मन्द गति के कारण ही बताता रहता है; अपनी धीमी प्रगति होने का स्पष्टीकरण ही देता रहता है परन्तु इसी बीच ऐसी अपार हानि हो जाती है कि फिर पछताने से उसकी क्षति-पूर्ति तो हो नहीं सकती।** लोग योगी को यम, नियम...और प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि का अभ्यास करने के लिये कहते हैं और योगी भी मन में परमपिता परमात्मा का 'ध्यान' करने तथा यम-नियमों का पालन करने का पुरुषार्थ करने का ख़याल रखता है, परन्तु दो-तीन बातों का ध्यान न रखने से धीरे-धीरे यम-नियम भी ढीले होने लगते हैं और परमपिता परमात्मा में भी ध्यान नहीं लगता। अतः मन में परमात्मा का 'ध्यान' करने के साथ-साथ दो-तीन महत्त्वपूर्ण बातों की ओर ध्यान देना भी ज़रुरी है वरना स्थिति परिपक्क्व नहीं हो पाती। किसी ने कहा है—"आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा।" एक माता अपनी पड़ोसिनों के साथ ढोल बजा कर कीर्त्तन करके शान्ति प्राप्त करने के यत्न में लगी थी; उसका ध्यान हटा देख कर कुत्ता उसकी सभी रोटियाँ ही हज़म कर गया ! ऐसे ही मनुष्य तो टेप-रेकार्ड और कैसेट रूपी आधुनिक ढोल पर गीत बजा कर परमात्मा का ध्यान करने का यत्न कर रहा होता है परन्तु व्यर्थ संकल्प रूपी 'कुत्ता' आ कर उसकी बनाई हुई धारणा ही चट करने लग जाता है।

अतः ज़रूरत इस बात की है कि मनुष्य जैसे ही परमपिता परमात्मा का 'ध्यान' करे वैसे वह तत्सम्बन्धित आवश्यक बातों पर भी ध्यान दे ताकि न केवल वह योगाभ्यासी ही बना रहे बल्कि वह "योगी जीवन" वाला भी हो। इस लिए निम्नलिखित दो-तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं :—

सीखने की प्रवृत्ति और नम्रता

आध्यात्मिक जीवन में प्रगति रुक जाने का एक बहुत बड़ा कारण है—धीरे-धीरे सीखने की प्रवृति का मन्द पड़ जाना। जब व्यक्ति योगी जीवन के पथ पर पग धरता है तब प्रारम्भ में तो उसे एक धुन-सी लग जाती है। जीवन को पलट डालने के लिये वह उत्साही हो उठता है। उसके मन में यह संकल्प समर्थ बन जाता है कि योग के उच्च शिखर पर चढ़ जाना है। परन्तु जब वह कुछ सीख जाता है, थोड़े बहुत अन्य लोगों से आगे भी निकल जाता है या

उसे योग के कुछ अच्छे अनुभव भी हो जाते हैं, तब वह स्वयं को अनुभवी या योग में शिक्षित मान कर चलने लगता है और आगे सीखने में उसकी पूर्ववत् रुचि नहीं रहती। उसका एक कारण यह भी होता है कि वह दूसरे योगाभ्यासियों में कई बार कोई जलवा नहीं देखता बल्कि उन्हें भी कहीं-न कहीं रुका हुआ देखता है या वह स्वयं को ही समझदार मानकर दूसरों से योग-चर्चा करने अनुभव का लेन-देन करने, उनसे अपनी प्रगति के लिये कुछ प्रकाश पाने की कामना ही नहीं करता। **सूक्ष्म रूप में उसमें एक अहंकार-सा होता है जिसका कई बार उसे पता भी नहीं रहता। वह अब यह भी नहीं सोचता कि अब यदि शरीर छूट जायेगा तो क्या गति होगी? क्यों न किसी वरिष्ठ योगी से कुछ और लाभ ले लें? जीवन के कार्य-क्षेत्र में वह भी कार्यकुशल होने से स्वयं को सर्व प्रकारेण कुशल ही मानने लग जाता है और अपनी कमियों को छिपा कर, दबा कर या यों ही एक ओर कर के रख लेता है।** वह सोचता है कि "कमियाँ तो सभी में हैं।" इस प्रकार स्वयं को "तीस मार खान" मान कर वह इतना तो गर्व के गर्त्त में धंस जाता है कि यदि उसे कोई हित-कामना कर के दलदल से निकालना भी चाहे तो वे उसे अपने से भी कम श्रेणि का या सम-श्रेणि का मानकर उसकी नसीहत को ही उड़ा देता है। परिणाम यह होता है कि पहले तो कोई, चाहे उसे वरिष्ठ ही क्यों न हो, उसे कुछ हित-मंगल की बात कहने में ही सकुचाता है; यदि वह उसे कह भी दे तो वह उसे 'हस्तक्षेप', 'अनाधिकार चेष्ठा', 'अनुचित' या 'व्यर्थ की बात' मानता है। वह या तो समझता है कि "यह बात तो मुझे भी मालूम थी, यह कौन सी नई बात है," अथवा "यह कमज़ोरी तो सभी में है, केवल मुझ में थोड़े ही है," या कि "केवल मुझे ही यह शिक्षा क्यों दी जाती है"; मुझे समझाने वाला पहले अपनी भूल तो ठीक करे...।" इस प्रकार की सारी प्रतिक्रिया सूक्ष्म अभिमान ही की कोंपलें, कांटे ओर ज़हरीले पत्ते ही तो हैं। परन्तु वह इन्हें ही अपनी बुद्धिमता मान कर सद्बुद्धि के मार्ग पर आगे अनुभव पाने से वञ्चित रह जाता है।

इसलिये कहा गया है कि नम्रता के बिना मनुष्य सीख नहीं सकता और कि जो सीखना ही नहीं चाहता, मानो कि वह बुढ्ढा हो गया है; उसकी युवावस्था ही समाप्त हो गयी है। जब कोई सीखना ही बन्द कर देता है तो उस बुढ्ढे का विकास कैसे होगा?

अतः अध्यात्म के पुरुषार्थी का सब से पहले तो इस बात पर ध्यान होना चाहिये कि अभी और बहुत कुछ सीखना है। जिससे भी कुछ अच्छी बात मिले, उसे अवश्य धारण करना है। यह सारा जीवन ही अन्त तक सीखने के लिये है।

गुणग्राहक वृति में कमी

सीखने का एक तरीका तो यह है कि जिससे भी हमें कोई अच्छी बात सुनने और समझने को मिले उसको हम अपने अभिमान में आकर या कोई-न-कोई व्याख्या देकर उसका तिरस्कार न कर दें बल्कि बताने वाले का भी हार्दिक धन्यवाद करके कहें कि हम इस बात पर ध्यान देंगे और सही अर्थों में हम इस बात पर ध्यान दें भी। **दूसरा तरीका यह है कि यदि हमें मौखिक रूप से कोई ऐसा ज्ञान-मोती या गुण-रत्न नहीं भी देता है तो हम वैसे भी व्यवहार में हरेक से गुण लें और उसके गुण की कभी चर्चा भी करें। यदि हम गुण नहीं लेंगे तो अवगुण लेंगे और उससे तो पतन ही होगा, प्रगति तो नहीं होगी। किसी के अवगुण देखने पर भी हम कुछ सीख तो रहे ही होंगे परन्तु उलटा सीख रहे होंगे। इस से पुरुषार्थ की गाड़ी आगे बढ़ने की बजाय पीछे ही हटेगी।**

टाल मटोल करने की आदत

हमारी प्रगति न होने का एक कारण यह भी है कि हम यह मान कर चलते हैं कि आगे चल कर हम अपने संस्कारों को बदल लेंगे, परिस्थितियाँ ही ऐसी आयेंगी जो सभी बदलेंगे; तब हम भी तो बदलेंगे ही। कुछ समय के बाद, जब हमारी अमुक परिस्थिति बदल जायेगी तो हम खूब योग साधेंगे। हम ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करेंगे कि सभी देखते ही दंग रह जायेंगे। **इस प्रकार के सोच से मनुष्य पुरुषार्थ को स्थगित अथवा मुलतवी करता जाता है और परिणाम यह होता है कि समय हाथ से निकल जाता है।** अतः इस बात की ओर भी ध्यान देने की ज़रुरत है कि समय हाथ से न निकल जाय, जो करना है उसमें हम टालमटोल न करें वरना यह आलस्य और अलबेलापन बहुत ही हानिकर है। यदि हम इन बातों पर ध्यान देंगे तो परमपिता परमात्मा में ही हमारा 'ध्यान' लगेगा ही।

—जगदीश

अब फिर बजेगी वह सुख-चैन की बाँसुरी

ब्रह्माकुमारी कमलमणि, कृष्णनगर, देहली

भारतवासियों की मान्यता है कि श्रीकृष्ण बंसी बजाया करते थे। उनके चित्रों में उन्हें 'बंसीधर' अथवा 'मुरली मनोहर' के रूप में चित्रित किया जाता है। प्रश्न उठता है कि वह कौनसी बांसुरी थी जिस को वह किशोरावस्था ही से बजाते थे?

वास्तव में 'बांसुरी बजाना' और 'मीठे राग अलापना' प्रसिद्ध मुहावरे हैं। श्रीकृष्ण का जीवन अत्यन्त सुखमय था और हर प्रकार से उत्तम था। इसलिए मुहावरे में कहा जा सकता है कि 'वह सुख-चैन की बांसुरी बजाया करते थे। उसी बांसुरी की तान के लिए अर्थात उनके जीवन-काल के जैसा सुख फिर-से प्राप्त करने के लिये ही आज तक भारतवासी उन्हें 'ओ बंसी वाले फिर आ जा रे, सुख-चैन की तान सुना जा रे' कह कर याद किया करते हैं। परन्तु आज लोग प्रायः इस रहस्य को नहीं जानते कि श्रीकृष्ण का वैसा सुखमय स्वराज्य सतयुग के आरम्भ में था और कि उन्हीं का नाम स्वयंवर के पश्चात "श्रीनारायण" हुआ था। सतयुग में जब श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का तथा उनके सूर्यवंश का राज्य था तब सभी सुख का श्वास लेते थे क्योंकि किसी के प्राण न काल के पंजे में थे न माया के, न रोग के न शोक के, न जाप के न प्राणायाम के। उस समय जल-थल, तत्त्व-सत्त्व सभी पर उनका अटल और अखण्ड राज्य था क्योंकि उन्होंने पूर्व काल में परमपिता परमात्मा शिव से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और योग की शिक्षा प्राप्त कर के माया पर विजय प्राप्त कर ली थी।

अतः यह ध्यान देने योग्य बात है कि जब परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा गीता-ज्ञान की मुरली बजाते हैं तब सभी आत्माओं को सुख मिलता है क्योंकि वे माया अर्थात विकारों पर विजय प्राप्त कराती है। उसके बाद ही सतयुगी स्वराज्य का आरम्भ होता है जहाँ सुख-चैन की बाँसुरी बजती है।

(पृष्ठ १ का शेष)

इस कार्यक्रम की एक विशेषता यह है कि समाचार पत्र और पत्रिकाएं भी इसमें अपना योगदान दे रहे हैं। उन्होंने तथा रेडियो और टेलीविजन वालों ने भी इस कार्यक्रम के समाचारों का प्रसार करने की सहर्ष सहमति दी है। अनेक व्यापारिक संस्थाएं, जो अब तक प्रायः केवल अपने व्यापार-कार्य में ही लगी रहीं हैं, ने भी विभिन्न प्रकार से इसमें भाग लेना स्वीकार किया है। उदाहरण के तौर पर उनमें से कई कम्पनियां "एक मिनिट शान्ति-दान" के लिये घाषणा छपवाने और उन्हें व्यक्तियों तथा संस्थाओं को भेजने की जिम्मेदारी ली है।

शान्ति-दान के लिये इन घोषणा पत्रों में लोग यह घोषित करेंगे कि वे प्रतिदिन कितने मिनट शान्ति में, ईश्वरीय स्मृति में या शुभ विचारों (पाजिटिव थाटस) में स्थित होकर विश्व-शान्ति के इस अभियान की सफलता के लिये योगदान देंगे। हरेक देश के वासियों को कम से कम 10 लाख शान्ति- मिनिट दान देने की अपील की गयी है। इसलिये अंग्रेज़ी में इस कार्यक्रम का नाम "मिलियन मिनिटस् औफ पीस अपील" है।

इस कार्यक्रम की शुरूआत 16 सितम्बर को लंडन में ट्रेफालगर से और भारतवर्ष में माउंट आबू से, जहां पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का मुख्यालय है, की जायेगी। समस्त इंग्लैंडवासियों से यह प्रस्ताव किया गया है कि वे सभी उस दिन दोपहर 12 बजे एक मिनिट शान्ति में स्थित हों।

16 अक्तूबर को शान्ति-मिनिट-दान का एक मास पूरा होने पर इस कार्यक्रम का समापन 22 अक्तूबर को न्यूयार्क में एक सार्वजनिक संगीत कार्यक्रम के रूप में तथा 24 अक्तूबर को संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव तथा विश्व के अन्य नेताओं को शान्ति-मिनिट-दान की रिपोर्ट पेश कर के होगा।

"तपस्या में बाधक—
सूक्ष्म कामनाएँ और दुर्भावनाएँ"

□ ब्र०कु० सूरज कुमार, आबू

"मेरे से निरन्तर योग-युक्त कैसे रहो"-भगवान ने स्वयं ही सिखाया। इस योग की ही निरन्तर व शक्तिशाली स्थिति तपस्या कहलाती है। तपस्या अर्थात जिसमें तप कर आत्मा निखर जाए। इस तपस्या के लिए मनुष्य को अनेक बातों का, अनेक विचारों का, अनेक वृत्तियों का, और अनेक कर्मों का भी त्याग करना पड़ता है।

तपस्या अर्थात योगाग्नि में सदा ही तपते रहना। यह अग्नि होते हुए भी चित्त को शीतल करती है। इस अग्नि से पाप कर्मों का कूड़ा करकट जल कर भस्म हो जाता है। यही वह योग-अग्नि है जिसके लिए प्रसिद्ध है कि 'रुद्र ज्ञान यज्ञ' से विनाश ज्वाला प्रकट हुई। अर्थात् योग की ज्वाला से पाप और पापी दोनों ही नष्ट हो जाते हैं।

"घोर तपस्या का अन्तिम वर्ष", इसमें भी यदि हम चूक गये, तो यह वरदान का समय यों ही निकल जायेगा। तो हमें स्वयं से पूछना है कि हम अच्छे से अच्छा क्या कर सकते हैं और हम क्या कर रहे हैं? तपस्वी स्वरूप में हमें यह स्पष्ट आभास होता है कि शन्ति व शक्ति की किरणें हमसे चारों ओर प्रवाहित हो रही हैं। तो आओ हम देखें कि ऐसी सूक्ष्म तपस्या में सूक्ष्म बाधाएँ क्या हैं।

सूक्ष्म कामनाएँ

यों तो संसार में रहते हुए आवश्यक इच्छाएँ मन में उठती ही हैं, इच्छाओं के बिना तो जीवन का एक भी क्षण नहीं बीतता, परन्तु मानव मन में अनेक अनावश्यक व सूक्ष्म इच्छाएँ उठकर योग अभ्यास में बाधा उत्पन्न करती हैं। इन्हीं सूक्ष्म कामनाओं को परख कर हमें समाप्त करना है।

एक तपस्वी पथिक के लिए कटीली तारों के समान ये सूक्ष्म भौतिक कामनाएँ मन का ध्यान बटाए रखती हैं। इनसे दुखों का जन्म होता है और स्वाभिमान का नाश। और ज्यों-ज्यों आध्यात्म पथ पर राही उन्नति की ओर बढ़ता है, सूक्ष्म कामनाएँ उसे चारों ओर से घेरने लगती हैं, और यह कामनाओं की वृद्धि तपस्या को कठिन बनाने लगती हैं।

क्या हैं यह सूक्ष्म कामनाएँ...? मान-शान व महिमा की कामना, देखने सुनने व बोलने की कामना खानेपीने व पहनने की कामना, दैहिक रसों की कामना दूसरों के प्यारे बनने की कामना, दूसरों की नज़रों में आने की कामना, सांसारिक पदार्थों की इच्छा आदि आदि कर्मेन्द्रियों के सूक्ष्म रसों की इच्छाएँ योगी के पथ में बाधक हैं। वास्तव में इन सबका सच्चा संन्यासी ही सच्चा तपस्वी बन सकता है। अर्थात जो सदा ही सन्तुष्ट है। "No desire and no interest" जिसे न कोई इच्छा है न शौक है, जो ईश्वरीय प्राप्तियों में मग्न हैं वही तपस्वी बनने का अधिकारी है।

कामनाओं का मूल—काम

कामना शब्द का निर्माण काम से ही हुआ है। कामना = काम + ना अर्थात जहाँ काम नहीं होगा, वहां कोई कामना नहीं होगी। सोचने की बात है कि जिसने काम जैसे भौतिक सुखों का त्याग कर दिया, वह और कहां सुख ढूंढेगा। कामनाओं की होड़ मनुष्य को पुनः काम की ओर प्रेरित करती है क्योंकि काम की सूक्ष्म कामना मन को अतृप्त करती है और फलतः मनुष्य तृप्ति के लिए कामनओं के पीछे दौड़ता है। वास्तव में जो योगी काम पर विजय प्राप्त कर लेता है, उसे असीम आत्मिक सुख की प्राप्ति होने से कामनाओं की अविद्या हो जाती है।

क्या अभौतिक आत्मा भौतिक साधनों से संतुष्ट होगी?—

आज मनुष्य कामनाओं का गुलाम होकर जितना उनके पीछे दौड़ रहा है उतना ही अशान्ति का आह्वान कर रहा है। तो सत्यता यही है कि भौतिक प्राप्तियों

स्वर्णिम युग कल्पना या यथार्थ

□ब्र.कु. प्रकाश., भोपाल

समय का चक्र परिवर्तनशील है । संसार का हर व्यक्ति, वस्तु व परिस्थिति समय की तीव्रगति के साथ परिवर्तित एवं परिवर्धित होते रहते हैं । इसे ही घटनाक्रम या सृष्टि नाटक कहा जाता है । घटना के इस क्रम में एक बात चिर चर्चित एवं विचारणीय है कि क्या विश्व में ऐसा भी कोई समय था जहां हिंसा, अत्याचार, मिलावट, जाति-धर्म भाषा व रंगभेद के झगड़े न रहे हों । जहां आपसी प्रेम अमन चैन व सौहाद्रता रही हो, वसुधैव कुटुंबकम की स्थिति रही हो । किंवा ऐसा भी कोई समय था जिसे मनुष्य सृष्टि का स्वर्णकाल या स्वर्ग कहा जा सके ?

यदि इस पहलू पर दृष्टिपात करें और अतीत को टटोलें तो उपरोक्त स्थिति का यथावत साक्षात्कार होता है । जिसे काल गणना के हिसाब से ईसा से ३००० वर्ष पूर्व की स्थिति माना जा सकता है । ईसाई धर्म में भी उस समय को हैवन, पैराडाइज़ माना गया है । दूसरी ओर भौतिकवादी, वैज्ञानिक यह मानते हैं कि मनुष्य और उसकी संस्कृति का विकास निम्नतर स्तर और सूक्ष्म अति सूक्ष्म रूप से हुआ है । उनकी धारणा है कि प्रकृति की श्रेष्ठ कृति कहलानेवाला मानव अणु रूपी जीवांशों से अथवा अमीबा जैसे प्राणियों से उत्तरोत्तर विकसित जटिलतम रूप है । डार्विन आदि वैज्ञानिक बंदर सदृश्य प्रजातियों से मानव का विकास मानते हैं परंतु विकासवाद का यह सिद्धांत तर्क और यथार्थता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता । इसी प्रकार ऐतिहासिक किंवदंतियां और सीमित प्रमाण जो कि अधिकतर द्वापर काल के बाद के अर्थात् तीन हज़ार वर्ष से अधिक समय के नहीं हैं यह दर्शाते हैं कि प्राचीन काल में मानव पशुवत रहता था, असभ्य था । वह पशु का मांस खाता था, पत्थरों से औज़ार बनाता था, उसमें भाषा और मर्यादा नहीं थी, क्रमशः उन्नति होते-होते शिक्षा और संस्कृति में सुधार द्वारा वह सभ्य और सुसंस्कृत बना, आधुनिक बना । इस प्रकार की मान्यता आधुनिक लौह युग को अति विकसित और उन्नत परम्परावादी विकासशील युग मानती है तथापि यदि समाकलन अन्वेषण और समालोचना की जाए तो मात्र अल्पकालीन ऐतिहासिक प्रमाण अथवा आधुनिक युगीन वैज्ञानिक तथ्य ही सब कुछ नहीं हैं और न ही पूर्णतः विश्वसनीय हैं वरन् आध्यात्मिक ग्रंथ और वैदिक प्रमाण इस बात की ओर इंगित करते हैं कि कल का मानव आज के मानव से कहीं ज्यादा मर्यादित, प्रबुद्ध और सुसंस्कृत था, साथ ही उस समय का ज्ञान और विज्ञान कोई कम उन्नत और उपलब्धि रहित नहीं था । यह शास्त्रोक्त, आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रमाणिक तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि ईसा से ३००० वर्ष पूर्व मनुष्य सृष्टि में दैवी स्वराज्य था । उस ज़माने में स्वचालित पुष्पक विमान, प्रक्षेपास्त्र आदि समुन्नत यंत्र, रसायन शालाएं और वैद्यशालाएं थीं । रसायन विज्ञान के पिता कहलानेवाले नागार्जुन ने उस काल में ही अमृत जैसी रसायन का निर्माण कर डाला था, यह सारी बातें उस तथाकथित काल की तथा वहां के मानवों की उन्नत एवं अति विकसित अवस्था के सूचक हैं । इस प्रकार यह बात पुष्ट होती है कि अतीत का वह समय वर्तमान से ज्यादा श्रेष्ठ

रक्षा बन्धन

□ले.-बी.के. मोहन., आबू

भईया तेरे लिए नया श्रृंगार लाई हूं,
ज्ञान के धागों में शिव का प्यार लाई हूं ।
आत्मा की रक्षा का यही निराला है बन्धन,
पवित्रता का है यह अनमोल एक कंगन,
तेरे स्वर्ग जाने का अधिकार लाई हूं ।
भईया तेरे लिए.....
रक्षा बन्धन सदा यही, धारणा सिखलाता,
शिव से जोड़ ले तूं जो टूटे ना वो नाता,
सदा स्वतन्त्र होने का उपहार लाई हूं ।
भईया तेरे लिए.....
इस राखी में भरे हुए हैं कई सुख न्यारे,
इसमें कई जन्मों के छुपे हैं स्वर्ण नजारे,
संगम और सतयुग के सुखों का सार लाई हूं ।
भईया तेरे लिए.....
शिव ने रक्षा बन्धन का सन्देश सुनाया,
ब्रह्मा ने पालना का आदेश बताया,
कई बहनों के शुभ संकल्पों के तार लाई हूं ।
भईया तेरे लिए ..... □

और समृद्ध था। सिर्फ उपरोक्त बातें ही नहीं वरन् अन्य पहलू भी इस कथन को और यथार्थ बनाते हैं कि तीन हज़ार वर्ष पूर्व क्या परंतु यदि आज से २००-४०० वर्ष पूर्व का इतिहास देखें और समकालीन, महापुरुषों के अनुभव प्राप्त करें तो यह ज्ञात होता है कि उस समय इतना अत्याचार नहीं था, हिंसा और साम्प्रदायिकता नहीं थी, उपभोग की वस्तुएं सहज और सुलभ थीं, चोरों का भय नहीं था, आपसी सहयोग था। यहां तक कि प्रकृति भी नियंत्रित थी। फलतः न अधिक बाढ़ें आती थीं, न भूकंप, अति वृष्टि और अनावृष्टि का सामना करना पड़ता था। संक्रामक बीमारियां और असामयिक मृत्यु जैसी घटनाएं भी नहीं होती थीं।

एकता और अखंडता का प्रतीक वहां के बड़े-बड़े कुटम्ब और कबीले राजनीतिक और धार्मिक मान्यताएं भी काफी हद तक एक थीं। आज से ४० या ५० वर्ष पूर्व की राजनीति को देखें तो न इतनी पार्टियां थीं और न इतने मतभेद थे, स्वार्थ-परता इतनी चरम नहीं थी। इसी प्रकार धर्म की आज से १००-१५० वर्ष पूर्व की स्थिति देखी जाय तो न इतने मठ और पंथ थे न कर्मकांड और आडम्बर, स्वयं को ईश्वर कहलानेवाले अल्पज्ञ और धूर्त तथाकथित गुरु भी नहीं थे। धर्म के नाम पर हिंसा, लूट आदि नहीं थी। धर्म और कर्म में सामंजस्य था, धार्मिक एकता थी, वर्ण और भाषा के झगड़े एक शताब्दी पूर्व इतने विकराल स्वरूप में नहीं थे। मानव, मानव में निकटता थी, आपसी प्रेम और सहयोग की भावना थी, अर्थात् समूचा विश्व जुड़ा हुआ सा प्रतीत होता था। इस प्रकार यदि हज़ारों वर्ष पूर्व की स्थिति पर विचार किया जाय और पौराणिक तथ्यों का भारतीय दर्शन और मनोविज्ञान का यथानुरूप आध्यात्मिक भाव समझने का प्रयास करें तो यह बात स्वयं सिद्ध है कि निकटतम तीन हजार ईसा से पूर्व उपरोक्त वर्णित स्वर्ण काल के संकेतों से परिपूर्ण सुखद और शांतिमय युग था जहां 'वसुधैव कुटुम्बकम' की परिकल्पना स्वयंमेव चरितार्थ होती है।

अतएव मानव-प्रकृति के अनुसार मनुष्य की पुनः यह चाहना रही है और बढ़ती जा रही है कि वह खोया सच्चा सुख और शांति, समृद्धि, वैभव और निश्चिंतता कब लौटेगी अर्थात् वह अपने परम लक्ष्य को कब प्राप्त कर लेगा। प्राप्त हुई अवस्था को पुनः पाने की चेष्टा स्वभावगत है, प्राकृतिक है। यह कोई कल्पना या स्वप्न नहीं है। यह मानव मन का विचलन या मनगढ़ंत चिंतन नहीं है वरन् यह सत्य की खोज है। यह तो यथार्थ का पुरुषार्थ है। पूर्णता की चाह है वास्तविकता को पाने का यह लक्ष्य सामयिक और घटित घटना का पुनरावर्तन है।

स्वर्णिम युग की स्थापना कौन करेगा ?

उपरोक्त चाहना से प्रेरित मानव अपनी-अपनी बुद्धि-विवेक और क्षमता के अनुरूप अपने-अपने सीमित क्षेत्र में प्रत्यासेपित होकर, एकबद्ध होकर उस सुखद भविष्य को पाने हेतु, कृत संकल्प है। चेष्ठावान है जैसे बड़े से बड़े राजनीतिज्ञ और समाज सेवक आजतक यही कहते रहे और कहते जा रहे हैं कि हम सुनहरे कल की ओर बढ़ रहे हैं। हम राम राज्य लायेंगे, हम धरा को स्वर्ग बनायेंगे आदि। वैज्ञानिक भी महीनतम खोजों द्वारा उपलब्धियों की चरमोत्कर्ष द्वारा तथा आणुविक शक्ति के विकास द्वारा सारी दुनिया से अलग चांद पर निष्कंटक और सुखमय जीवन जीने की कल्पना कर रहे हैं। इसी भांति अन्यान्य क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्ति उपलब्धि के इस चरम बिन्दु को ही पाने में आरोपित हैं। परंतु देखने में यह आ रहा है कि साइंस से विस्फोट हो सकता है परंतु शांति नहीं आ सकती क्योंकि साइंस के गर्भ से जिन प्रेक्षेपास्त्र, मिसाइल्स, अणु बमों और विषैली गैसों का जन्म हुआ है वह सभी हिंसक विनाशक और मानवता के लिये घातक हैं अशांति कारक है क्योंकि आधुनिक विज्ञान विवेक और दूरदर्शिता से रहित है। राजनीति भी स्वार्थ परता, पदलोलुपता और मिथ्याचार से भरी होने के कारण अनीति और अन्याय को ही बढ़ावा दे रही है अतः मानवता को जोड़ना, राम राज्य की शांति लाना यह राजनीति के वश की बात नहीं। इसी प्रकार धार्मिक नेता और धर्म वेत्ता मठ और पंथ के प्रणेता, संस्कृति और नीति के सूत्राधार देश के रक्षक और समाज के कर्णधार यद्यपि अपने-अपने क्षेत्र में अपनी-अपनी रीति से शांति और सुख पूर्ण जगत के निर्माण में जुटे हुए हैं या उसके प्रति प्रयत्नशील हैं परंतु शांति और सुख का स्रोत क्या है ? उसका ज्ञान न होने के कारण शांति मूलक विधि और विधान से अनभिज्ञ होने के कारण वे अपेक्षित वास्तविक शांति और सुख स्थापन नहीं कर सकते। अतएव यह बात और भी गहरी चोट करती है कि वर्तमान विषम परिस्थितियों में दुख-अशांति, भूख और अत्याचारों के थपेड़ों से इस अभिषप्त मानव को क्या कोई उबार भी सकेगा अथवा नहीं, क्या स्वर्णिम भारत की कल्पना, कल्पना ही रह जाएगी। भरत, राम और कृष्ण का वह देश क्या पुनः लौट सकेगा अथवा सृष्टि अत्याचारों की विभीषिका

और पांच विकारों के कालीदह के चंगुल में सदा के लिये जकड़ी रहेगी । उपरोक्त प्रश्न का जवाब संसार में किसी भी ज्ञानी-विज्ञानी, तर्क शास्त्री और दर्शन शास्त्री के पास नहीं है वरन् इस विशाल समस्या का समाधान स्वयं परमशक्तिवान परमात्मा ही देते हैं जिनका गीता के अनुसार वर्तमान धर्मग्लानि के समय पर अवतरण होता है । और वे ही सच्ची शांति और सुख की स्थापना करते हैं । मनुष्य को उसकी खोई हुई आत्मिक निधि वापस लौटाते हैं । सारे विश्व को आत्मा का पाठ पढ़ाकर एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा के सूत्र में बांध देते हैं क्योंकि वे स्वयं ही शांति और सुख के सागर हैं । सर्वशक्ति के सागर हैं, वे ही हर मानव के सच्चे परमपिता और परमशिक्षक हैं ।

स्वर्णिम युग की स्थापना किस प्रकार ?

यदि उपरोक्त बातों का सिंहावलोकन करें तो यह बात दृष्टिगत होती है कि अब से पूर्व स्वर्ग सतयुग था जो क्रमिक रूप से गिरावट में आकर कलियुगी नरक बना जिसमें दुख-अशांति व अत्याचार चरम बिन्दु पर विद्यमान हैं।वस्तुत: यह मानना होगा कि किसी भी समय या युग की श्रेष्ठता उस समय में वास करनेवाली आत्माओं की स्थिति पर तथा उसके संस्कार और विचारों पर निर्भर होती है।अतएव युग अच्छा और बुरा नहीं होता, मनुष्य के विचार और संस्कार अच्छे और बुरे होते हैं । इस प्रकार युग परिवर्तन हेतु विचार और संस्कार परिवर्तन आवश्यक है और यह कार्य किसी वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ या धर्म वेत्ता की क्षमता से परे है । यह तो स्वयं परमात्मा ही आकर सत्य-ज्ञान और राजयोग की शिक्षा द्वारा आत्माओं के पतित विकारी और दुर्बल विचारों तथा संस्कारों का परिवर्तन कर उन्हें पावन श्रेष्ठ और सशक्त बनाते हैं और सशक्त विचार ही सफलता का आधार है तथा सूक्ष्म रूप से मन की पवित्रता ही सच्ची सुख-शांति, विश्व एकता और बंधुत्व का आधार है । इसीलिये गायन है पवित्रता ही सुख-शांति की जननी है । पवित्रता के आधार से ही देवता सम्पन्न थे, वहां कोई वस्तु अप्राप्त नहीं थी । अंतत: हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि स्वर्णिम युग की कामना प्राकृतिक है एवं सत्य है तथा अवश्यमेव ऐसा युग आयेगा परंतु उसके लिये मानव मात्र को परमात्मा पिता द्वारा दिये जा रहे राजयोग और ज्ञान की शिक्षा से अपने मन और विचारों को निर्मल बनाने की परम आवश्यकता है । □

पलसिकर कॉलोनी (इन्दौर): मध्यप्रदेश विधान सभा के उपाध्यक्ष माननीय कन्हैयालाल जी यादव द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं । ब्रह्माकुमारी आरती बहन तथा ब्र.कु. किरण आदि साथ में दिखाई दे रही है ।

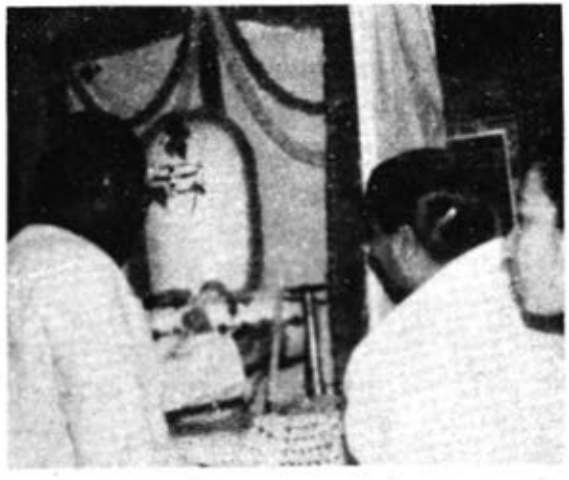

डोंबिवली: राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करते भूतपूर्व विधायक भ्राता जगन्नाथ जी पाटिल तथा उनके साथ ब्र.कु. नलिनी तथा ब्र.कु. शकु बहन ।

नया और विचित्र रक्षा बन्धन

शताब्दियों से हर वर्ष बहनें अपने-अपने भाइयों को बड़े स्नेह से रक्षा-बन्धन बाँधती आई हैं। परन्तु विचार करने की बात है कि यह जो सुन्दर-सुन्दर डोरों का बना हुआ बन्धन बहनें अपने भाइयों की कलाई को बाँधती आई हैं, उस बन्धन को निभाने में भाई कहां तक सफल हुए हैं और बहनें भी बाँधते समय कहाँ तक इस भाव को लिए होती हैं? अनुभव के आधार पर सभी कहेंगे कि आज यह त्यौहार थोड़ी-बहुत खुशी मनाने का अवसर मात्र और एक रस्म पूरा करने का दिन होकर ही रह गया है, वरना न तो इसे कोई बन्धन मानकर निभाता है और न ही इस में रक्षा की कोई बात ही गम्भीरतापूर्वक सोची गई होती है। हम देखते हैं कि रक्षा-बन्धन के दिन बहुत छोटी आयु वाली बहने भी अपने छोटे-छोटे भाइयों को बन्धन बाँधती हैं। सोचिये तो भला इतनी छोटी आयु वाले बच्चों के मन में रक्षा का क्या संकल्प हो सकता है? बड़ी आयु वाले भाई भी बहनों की कहाँ रक्षा कर सकते हैं? फिर रक्षा केवल बहनों को थोड़े ही चाहिए, भाइयों को भी तो रक्षा की आवश्यकता होती है? पुनश्च, आज बहन यहाँ रहती है तो भाई सैंकड़ों मील दूर रहता है, वह तो समय पर पहुँच भी नहीं पाता है। भिन्न-२ प्रकार के शत्रुओं से भी हर समय कौन किसी की रक्षा कर सकता है? अतः प्रश्न उठता है कि वास्तविक रक्षा बन्धन कौनसा है?

धर्म ही रक्षक

इसके अतिरिक्त, जहाँ तक रोग, निर्धनता तथा अन्य प्रकार की आपदाओं और विपदाओं का प्रश्न है, इसके बारे में भी सभी जानते हैं कि वे भी मनुष्य के अपने ही कर्मों के फल के रूप में सामने आते हैं। जब तक मनुष्य अपने कर्मों को न सुधारे, अपने स्वभाव को मधुर और दिव्य न बनाये तब तक तो रक्षा का कोई उपाय नहीं है। अतः स्पष्ट है कि रक्षाबन्धन कोई स्थूल चीज नहीं है बल्कि यह धर्म का बन्धन अथवा पवित्रता का बन्धन है। जो धर्म की रक्षा करते हैं, धर्म उनकी रक्षा करता है। जो मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्र रहता है, उसकी रक्षा उसके अच्छे कर्म करते हैं, कोई-न-कोई व्यक्ति उसकी सहायता के लिए निमित्त बन ही जाता है। अतः अब हमको वास्तव में यह पवित्रता का नया और विचित्र बन्धन बाँधना चाहिए।

बहने भाइयों को बन्धन क्यों बाँधती हैं?

बहनों का भाइयों से बहुत ही स्नेह होता है। वे अपने भाइयों का चारित्रिक पतन नहीं देख सकतीं और उन्हें विकारों के बन्धन में बँधा हुआ देखना भी स्वीकार नहीं कर सकतीं क्योंकि विवेकवान् और ज्ञानयुक्त बहने जानती हैं कि विकारों में बँधा हुआ व्यक्ति आखिर दुःख के बन्धन में, यम के बन्धन में और काल के बन्धन में बँधता है। इसलिए वे उसे पवित्रता का एवं धर्म का बन्धन बाँधती हैं। अतः शारीरिक नाते से इस बन्धन को बाँधना अथवा शरीर को (कलाई को) बन्धन बाँधकर उत्सव को पूरा हुआ मानना, इस महान् उत्सव के रहस्य को न जानना है। वास्तव में यह तो एक 'धार्मिक उत्सव' है। अतः धर्म के नाते से बहनें, भाईयों को बन्धन बाँधती हैं और यह डोरों का बन्धन बाँधने और बँधवाने वाले दोनों को जानना अत्यन्त आवश्यक है। इस त्यौहार को जो विष-तोड़क पर्व अथवा 'पुण्य-प्रदायक' पर्व कहा गया है, उससे भी सिद्ध है कि यह कोई विचित्र बन्धन है और कि डोरों का बन्धन तो केवल उसका सूचक है। 'रक्षा-बन्धन बाँधो' का भावार्थ यही है कि "पवित्रता के व्रत की रक्षा करो।"

बहन-भाई का नाता बहुत पवित्र नाता है। बहन-भाई की दृष्टि एक-दूसरे के प्रति पवित्र होती है, उसमें काम-वासना का तो लेशमात्र भी कदापि नहीं होता। अतः धर्म के नाते से बहनें, भाइयों को अथवा ब्राह्मण यजमानों को यह बन्धन बाँधते हैं कि—भइया, पवित्र रहना क्योंकि **पवित्रता ही रक्षाकारी प्रभु को प्रिय है।**

वास्तव में जो बहनें स्वयं ब्रह्मचर्य व्रत को धारण नहीं किए होतीं अथवा जो ब्राह्मण स्वयं इस महाव्रत का पालन नहीं करते, वे इस बन्धन को किसी भी व्यक्ति को बाँधने के अधिकारी भी नहीं हैं। जो व्यक्ति स्वयं किसी नियम का पालन नहीं करता, उसे न तो दूसरों को उस नियम के बारे में उपेदश देने का अधिकार है, न ही उपदेश से किसी पर प्रभाव ही पड़ता है।

अतः स्वयं ब्रह्मचर्य व्रत को ज्ञान-सहित पालन करने वाली बहनें अथवा मनसा, वाचा, कर्मणा पवित्र

रहने वाले ब्राह्मण जब रक्षाबन्धन अपने भाइयों को अथवा यजमानों को बाँधे तभी उन्हें भी प्रेरणा मिलेगी। आदि काल में, अर्थात् सतयुग का आरम्भ होने से थोड़ा पूर्व, संगम युग में, जब प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञान-योग की शिक्षा प्राप्त करने वाले ब्राह्मणों ने अथवा माताओं व कन्याओं ने ब्रह्मचर्यव्रत पालन किया तब उन्होंने दूसरों को भी इस व्रत में बाँधा और उन्हें ईश्वरीय सम्मति दी कि वे इस व्रत की रक्षा करें। इस प्रकार से इस रक्षाबन्धन अथवा 'विषतोड़क' पर्व की शुरुआत हुई परन्तु आज तो विकारी ब्राह्मण अथवा विकारी महिलाएं भी रक्षाबन्धन बाँधती हैं जो कि अर्थ-रहित मनोबहलावा मात्र ही है। उससे कोई विशेष लाभ नहीं है।

आप जानते हैं कि यह त्यौहार श्रावण मास में मनाया जाता है। इस मास को 'मल मास' भी कहा जाता है। इन दिनों लोग पुरुषोत्तम मास भी मनाते हैं और सत्संग आदि भी बहुत करते हैं। तो यह प्रथा भी इसी रहस्य की ओर संकेत करती है कि जब सारी सृष्टि काम-क्रोधादि विकारों से मलीन हो गई थी अर्थात् जब कलियुग का अन्तिम चरण था तब परमपिता परमात्मा अथवा पुरुषोत्तम ने प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हुए और उन्होंने ज्ञान-वर्षा की, उन द्वारा ज्ञान सुनने वाले सच्चे एवं पवित्र ब्राह्मणों ने स्थान-स्थान पर सत्संग किए। तब उन्होंने लोगों को पवित्रता की रक्षा का बन्धन बाँधा।

अतः यदि 'काल' से, यमराज के दण्डों से, रोग और शोक से हम सचमुच रक्षा करते हैं तो हमें चाहिए कि आज हम पुनः यह विचित्र बन्धन बाँधें। अर्थात्, हम मनसा, वाचा, कर्मणा को पूर्ण पवित्र बनाने का व्रत लें। दूसरों को रक्षाबन्धन बाँधने अथवा उनसे बँधवाने की बजाय पहले तो हम स्वयं को इस बन्धन में बांधें। बाज़ार से एक रेशमी डोरों की तरह राखी खरीदकर उसे बाँध देने अथवा बँधवा लेने और कुछ पैसे तथा मिठाई दे-लेकर फिर निर्बन्धन हो जाना यह तो अपने जीवन के प्रति अचेत लोगों का काम है। यदि जीवन को कुछ उच्च बनाने की लग्न है, यदि प्रभु से सच्चा प्यार है तो पवित्रता का बीड़ा उठाना चाहिए। रक्षाबन्धन बँधवाना कायरों का काम नहीं, महावीरों का काम है। कायर भला किसी की क्या रक्षा करेंगे? और, महावीर तथा महावीरनी वह हैं जो काम विकार से युद्ध ठान लेता है, जो क्रोध की ज्वाला को बुझाकर शान्त करने के लिए रूहानी फायर ब्रिगेड में भरती होता है, जो मोह की खाई को लाँघने का दाव लगाता है और अहंकार को ज्ञान की टंकार से मिटा देता है।

अतः बाँधना है तो ऐसा रक्षाबन्धन बांधो कि जिससे स्वर्ग का स्वराज्य मिल जाय, जिससे प्रभु का प्यार प्राप्त हो, जिससे फिर कभी रक्षा की आवश्यकता ही न रहे और जिससे सभी कामनाएँ पूर्ण हो जायें। और जिससे पहले किसी का अपवित्रता-युक्त नाता अथवा व्यवहार रहा है, वह एक-दूसरे की पवित्रता का बन्धन बाँधें! रक्षाबन्धन के दिन वह यह व्रत धारण करें कि आज से हम पवित्रता के बन्धन में बँध गये हैं, अब हमारा जीवन एक नया जीवन होगा, इसमें हम अपने मन, वचन और कर्म की पवित्रता की पूरी रक्षा करेंगे और दूसरों के साथ अपने लेने-देन पर तथा अपने कर्म-खाते पर भी पूरा ध्यान रखेंगे ताकि उसमें किसी भी प्रकार की अपवित्रता न आये। इस प्रकार के रक्षाबन्धन से ही यह देश फिर श्रेष्ठाचारी अथवा स्वर्ग बन सकता है और यहाँ बापू गाँधी की राम-राज्य की शुभेच्छा पूर्ण हो सकती है। इसीलिए कहावत भी है कि इन्द्र को इन्द्राणी ने जब यह रक्षाबन्धन बाँधा था तो उसे स्वर्ग का दैवी स्वराज्य मिला था अथवा कि यमुना ने अपने भाई यम को जब यह बन्धन बाँधा था तो उसने यह वरदान दिया था कि इस दिन जो बहन-भाई रक्षाबन्धन बाँधेंगे वे यमलोक के दण्डों से बच जायेंगे। स्पष्ट है कि ऐसा रक्षाबन्धन जिससे कि स्वर्ग का स्वराज्य प्राप्त हो अथवा मनुष्य यम के दण्डों से बच जाय, पवित्रता ही का बन्धन हो सकता है, अन्य कोई बन्धन नहीं।

परन्तु आज बहुत-से मनुष्य घबरा जाते हैं। वे सोचते हैं कि पवित्र बनना तो बहुत कठिन है। यह बन्धन हम कैसे निभा सकेंगे? आज की दुनिया में अपने मन- वचन -कर्म की पवित्रता की रक्षा करना भला कहाँ सम्भव है? वास्तव में ऐसा सोचना पुरुषार्थ-हीनता का लक्षण है। पुरुषार्थ करने से सब-कुछ हो सकता है। पहले लोग समझते थे कि हिमालय पर्वत की चोटी माउंट ऐवरेस्ट पर चढ़ना असम्भव है परन्तु मनुष्य वहां तक पहुँच गये हैं। पहले उड़कर अन्तरिक्ष में जाना एक

कल्पना-मात्र समझा जाता था परन्तु आज मानव चाँद से आगे जा रहा है। अतः आज तो लोगों ने पुरुषार्थ से असम्भव को भी सम्भव कर दिया है। शिशु-काल में शिशु के लिए चलना बड़ा कठिन है। परन्तु अभ्यास से वह अपने पांवों पर खड़ा भी हो जाता है और चलने भी लगता है और फिर बड़ा होने पर तो भागता भी है। अतः आज जो कार्य अत्यन्त कठिन लगता है, पुरुषार्थ करने से कल वही कार्य सहज एवं स्वाभाविक रीति होना सम्भव हो जाता है। "जहाँ चाह, वहाँ राह" की उक्ति प्रसिद्ध है। यदि हम बहाने और हील-हुज्जत छोड़ दें और सच्चे मन से पवित्र रहने की चेष्टा करें तो कोई कारण नहीं कि हम पवित्र न रह सकें। परन्तु इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के अभ्यास का आधार लेना आवश्यक है।

अतः जबकि परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजेयोग की शिक्षा दे रहे हैं और इस प्रकार पवित्र सृष्टि की पुनः स्थापना का दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस शिक्षा को प्राप्त करके पवित्र बनें। और इस ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनें। इस अपवित्र सृष्टि का तो विनाश अब निकट भविष्य में बमों और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा वैसे भी होने वाला है और यह अपवित्रता, यह काम-वासना अथवा अन्य प्रकार की अशुद्धि छूटनी तो है ही, तो क्यों न इन काँटों और कंकरों को स्वतः ही छोड़कर हम परमपिता परमात्मा से ज्ञान-रत्न और पवित्रता की सौगात ले लें और इस प्रकार ऐसा नया और विचित्र रक्षा-बन्धन बाँधें जिससे कि भविष्य में २१ जन्मों के लिए दैवी स्वराज्य की प्राप्ति हो !

सम्बलपुर: सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी पार्वती जी अतिरिक्त जिलाधीश भ्राता सूर्य कुमार जी प्रधान को प्रदर्शनी समझा रही हैं। भ्राता के.के. दास सहायक जिला स्वास्थ्य अधिकारी उनके साथ खड़े-हैं।

कटक: स्वण जयंति के सु-अवसर पर निरंतर पचास घंटे की योग तपस्या का उद्घाटन करते भ्राता विचित्रानंद जी कार सम्पादक 'मातृभूमि' तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें एवं ब्रह्माकुमार भाई मंच पर बैठे हुए हैं।

मिर्ज़ापुर: ओवरा में साइकिल यात्रियों द्वारा आयोजित विश्वशांति कार्यक्रम में भाग लेते ओबरा ताप एवं जल विद्युत गृह के महाप्रबंधक भ्राता भुवन भूषण शर्मा। साथ में बैठे हुए हैं ब्र.क. भाई-बहिनें।

आरोग्य और आहार

□डॉ. गिरीश पटेल, मनोरोग चिकित्सक., बम्बई

(सुस्वास्थ्य-प्राप्ति यह हरेक का जन्मसिद्ध अधिकार है । स्वास्थ्य हमारी संपत्ति है । गंवाया हुआ स्वास्थ्य पुनः प्राप्त करने के लिये लोग अनेकानेक तरीके आजमाते हैं । फिर भी स्वास्थ्य-प्राप्ति और उसकी सम्भाल के विषय में आज के समाज में अज्ञान दिखाई पड़ता है । प्रस्तुत लेख में, लेखक ने आहार पद्धति का स्वास्थ्य पर होने वाला असर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्पष्ट किया है और सिद्ध करके दिखाया है कि शाकाहार लाभदायी है और मांसाहार बीमारियों को निमंत्रण देने वाला है ।) □□

संपूर्णता की प्राप्ति यह जीवन का ध्येय है । हरेक को ऐसी जीवन प्रणाली स्वीकार करनी चाहिये जिससे शरीर सुदृढ़ रहे, आत्मपरिवर्तन हो और ध्येयपूर्ति भी । इसलिये हमें मांसाहार से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना ज़रूरी है ।

रक्त में रहे हुए कॉलेस्ट्रॉल (Cholesterol)

मांसाहार से मिलनेवाली लगभग आधी चर्बी शरीर में ही जमा हो जाती है । और उससे रक्त में कॉलेस्ट्रॉल का प्रमाण बढ़ जाता है। (प्राणियों की चर्बी से रक्त में कॉलेस्ट्रॉल का प्रमाण बढ़ता है—यह विज्ञानमान्य है ।)

रक्त में कॉलेस्ट्रॉल का प्रमाण बढ़ने से रक्तवाहिनियों में चर्बी का संचय होने से वह सिकुड़ जाती है। रक्तवाहिनियों में चर्बी के स्तर जमा होने से रक्तचाप बढ़ता है । उच्च रक्तचाप से शरीर की अनेक इंद्रियों में रोग होने की संभावना होती है। मस्तिष्क की रक्तवाहिनियों से रक्तस्राव भी हो सकता है। जिससे पक्षाघात (Paralysis) हो सकता है। हृदय को खून पहुंचानेवाली रक्तवाहिकाओं में चर्बी जमा होने से हृदय के स्नायुओं को पहुंचानेवाले रक्त पर दबाव पड़ता है और उससे हृदयशूल (anginal pain) और हृदयविकार होने की संभावना रहती है । पित्तकण (Gall - stones) कई बार कॉलेस्ट्रॉल से होते हैं । जिन पदार्थों के सेवन से रक्त में कॉलेस्ट्रॉल का प्रभाव बढ़ता है ऐसे पदार्थों का सेवन कम करने से पित्तकण नहीं होते हैं ।

हरी सब्जियों में हरितद्रव्य (Chlorophyll) पाया जाता है । जो रक्त में रहे हुये कॉलेस्ट्रॉल का प्रमाण कम करने में मदद करता है । इसलिये कॉलेस्ट्रॉल से होनेवाले रोगों का प्रतिबंध करने के लिए कॉलेस्ट्रॉलयुक्त आहार कम करके हरितद्रव्ययुक्त पदार्थों का प्रमाण आहार में बढ़ाने से कॉलेस्ट्रॉल के संचय से रक्तप्रवाह मुक्त रहेगा । खून में होनेवाले गट्ठे (thrombii) और धमनियों पर होनेवाले दुष्परिणाम रोके जायेंगे ।

युरिक एसिड (Uric Acid) का उत्सर्गीकरण—

कई नाइट्रोजनयुक्त पदार्थों का रूपांतर शक्ति में होनेवाली प्रक्रिया (metabolism) का अंतिम घटक माना युरिक एसिड । मानव-मूत्रपिंड (Kidney) प्रतिदिन सात ग्रेन्स (grains) युरिक एसिड का उत्सर्ग कर सकता है। मांसाहार में युरिक एसिड अधिक मात्रा में होने के कारण मांसाहारी मनुष्य के मूत्रपिंड का कार्यभार बढ़ता है । परिणामस्वरूप, किडनीपेशियों में जलन होती है अथवा किडनीस्टोन्स (Kidney stones) होते हैं और कुछ समय पश्चात् मूत्रपिंड के अकार्यक्षम होने की संभावना होती है।

मांस से अनावश्यक घटक दूर करने का कार्य प्राणियों की किडनी ने किया होता, अगर उनकी हत्या न हुई होती । परंतु उनकी हत्या होने के कारण उनके मांस में रहे अनावश्यक घटक मानव के मूत्रपिंड को दूर करने पड़ते हैं । यह बात संशोधन से सिद्ध हुई है । नेफरायटिस (Nephrities) नामक मूत्रपिंड का रोग कई बार अधिक अनावश्यक पदार्थ (excess fleshly wastes) से होता है ।

एक-दो सप्ताह मांस, मछली व अंडे रहित आहार लेने से रक्तवाहिकाओं में रहा हुआ एल्ब्युमीन (Albumin) लगभग समाप्त होता है ।

युरिक एसिड से संधिवात, जोड़ों में सुजन (gaut) जैसी बीमारियां होती हैं ।

आंतों की कार्यविधि (Bowel Activity)

मांसाहार तंतुरहित है । उसमें खुरदरापन न होने के कारण आंतों का कार्य सुचारु ढंग से नहीं हो पाता और कब्जी होती है । आधुनिक वैधकीय पद्धति में तीन-चार दिन तक कब्ज को शारीरिक समस्या समझते नहीं । परंतु हमारी प्राचीन वैद्यकीय पद्धति सावधानी का ईशारा देते हुए कहती है कि 'कब्ज यह अनेक रोगों की जननी है ।' वर्तमान अंक विज्ञान भी यही सिद्ध करता है । ऑस्ट्रेलिया में लोग प्रतिवर्ष, प्रति

व्यक्ति 130 किलो गोमांस भक्षण करता है । इसलिये उस देश के लोग आंतों के कर्क रोग से (bowel cancer) अन्य देशों से अधिक पीड़ित रहते हैं ।

डॉ. एलान लॉंग (Dr. Alan Long) इंग्लैंड के शाकाहारी मासिक में लिखते हैं—शाकाहारी प्राणियों की आंतों की रचना मांसाहारी पशुओं की आंतों की रचना से भिन्न होती है । शाकाहारी प्राणियों की आंतों में प्राण वायु पर वृद्धिगत होनेवाले एरोबिक बैक्टेरिया (Aerobic bacteria) अधिक होते हैं और मांसाहारी जानवरों के आंतों में प्राणवायु के बिना बढ़नेवाले एनरॉबिक बैक्टेरिया (Anerbic bacteria) में बैक्टेराईड्स का (bacteroids) अंतर्भाव होता है । उसमें एन्झाईम सेवन-आल्फ डिहायड्रोक्सिलेज (enzymer 7–alpha dehydroxylase) होता है । वह पित्तरस के घटकों का रूपांतर डिऑक्सिकॉलेट्स (deoxycholates) में करता है । इसीको प्राणियों में कर्करोग जन्य तत्त्व कहा जाता है । विष्ठा में डिऑक्सिकॉलेट्स के संग्रह के कारण बड़ी आंत में कर्करोग होने की संभावना है ।

क्या शाकाहार का मधुमेह (diabetes) से सबंध है ?

कई विशेष जानकारी प्राप्त वैद्य मधुमेह के रोगियों को मांसाहार करने की राय देते हैं । क्योंकि उसमें कार्बोहाइड्रेट्स कम मात्रा में होते हैं । यदि यह सत्य है, फिर भी यह राय अन्न का रूपांतर शक्ति में होने की संपूर्ण प्रक्रिया के गहरे अभ्यास पर आधारित नहीं है ।

दिल्ली के प्रो.एन.एस.पी. वर्मा के किये गये वैज्ञानिक परीक्षण से यह सिद्ध हुआ है कि शाकाहार की तंतुशीलता मधुमेह से बचाती है । डॉ. वर्मा कहते हैं कि हरी सब्जियां, मशीन से पॉलिश न किया हुआ चावल आदि का सेवन अधिक मात्रा में करने से मधुमेह की सम्भावना कम होती है । संपूर्ण पाचन क्रिया को देखते हुए मधुमेह का मुख्य कारण कार्बोहायड्रेट्स (Carbohydrates) का सेवन नहीं, बॅल्कि अधिक मात्रा में कॅलरीज़ (excess caloric) होना है । मोटे व्यक्तियों में अक्सर दोष युक्त (liver) में होता है न कि स्वादुपिंड (Pancreas) में । इसलिये मधुमेह का सम्बंध शाकाहार से है—ऐसा कहना गलत है ।

प्राणियों की हत्या

अहिंसा के सिद्धांत के अनुसार प्राणियों की हत्या करना यह एक पापकर्म है । 'स्वास्थ्य के लिए मांसाहार' करनेवालों को यह बात ध्यान में हो कि प्राणियों की हत्या से उनके मांस में अनेक प्रकार के जहरीले द्रव्य (Toxins) उत्पन्न होते हैं । जिस समय जानवर की हत्या की जाती है, उस समय मृत्यु के भय से और मृत्यु से बचने के लिये किये गये प्रयत्नों से उस जानवर के मांस में (Epinephrine) एपिनफरिन, (Norepinephrine) नॉरएपिनॅफरिन (Steroids) स्टॅरॉइड्स और अन्य रसायनों का स्त्राव होता है, जो विषैला होता है । मांस के साथ-साथ ऐसे अनेक प्रकार के जहरीले पदार्थों का सेवन होता है, जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है ।

मांसाहार से शक्ति का अपव्यय

गाय, बकरी इत्यादि शाकाहारी जानवर हैं । ऐसे जानवरों के आहार का (वनस्पति प्रोटीन का) रूपांतर उनके मांस में (प्राणी प्रोटीन में) होने की प्रक्रिया में बहुत सा वनस्पति प्रोटीन नष्ट होता है । अंडे में 69%, सुअर में 85% और गोमांस में 94% वनस्पति प्रोटीन व्यर्थ जाता है ।

शाकाहार द्वारा प्राप्त होनेवाली शक्ति, उसे बनाने में लगनेवाली शक्ति से अधिक होती है । मांसाहार द्वारा प्राप्त होनेवाली शक्ति, उसे बनाने में लगनेवाली शक्ति से कम होती है । मांस सेवन द्वारा मिलनेवाली शक्ति से दुगुना ईंधन वह बनाने में लगता है । इसी प्रकार, दसगुना नुकसान (Battery eggs) (विशिष्ट प्रकार के अंडे) के सेवन से तो तीसगुना नुकसान,गहरे सागर के तले की मछलियों के सेवन से होता है । इसलिये शक्ति का अपव्यय रोकने के लिये शाकाहारी आहार-पद्धति का अवलम्बन करना ज़रूरी है ।

मानव शाकाहारी प्राणी

मानवीय अस्थि संस्था और शरीर रचना का अध्ययन सिद्ध करता है कि मानव शाकाहारी है । मनुष्य प्राणी और शाकाहारी प्राणी में साम्य तथा शाकाहारी प्राणी और मांसाहारी प्राणी के बीच का अंतर 'मानव मांसाहारी प्राणी नहीं, बल्कि शाकाहारी प्राणी है'—यह स्पष्ट करता है । शाकाहारी और मांसाहारी प्राणियों में निम्नलिखित कुछ मुख्य भेद है ।

१. शाकाहारी प्राणियों की आंतों की लम्बाई मांसाहारी प्राणियों की लम्बाई की अपेक्षा चारगुना अधिक होती है । तो मांसाहारी प्राणियों में वह उनकी ही लम्बाई जितनी होती है ।

२. मांसाहारी प्राणियों के काटनेवाले दांत (Canine) बड़े-बड़े और अति तीक्ष्ण होते हैं । मानव के यह दांत छोटे होते हैं ।

शेष पृष्ठ १८ पर

जगत की स्वप्नमात्रता...

□डॉ. बलदेव राज गुप्ता., किशनपुरा

एक बार की बात है कि एक भिखारी बस अड्डे पर एक बैंच पर सोया हुआ था। सोते-सोते उसे स्वप्न आया कि वह राजा बन गया है। उसने बहुत बहुमूल्य वस्त्र पहने हुए हैं। वह अपने शाहीमहल में मखमली गद्दे पर लेटा हुआ है और चारों तरफ दास-दासियां उसकी सेवा कर रही हैं और वह बड़े आनंद में है। अचानक ज्यों ही उसने बैंच पर सोते-सोते करवट बदली तो बैंच छोटा होने के कारण वह धड़ाम से बैंच से नीचे गिरा और उसकी नींद खुल गई। नींद खुलते ही उसे वास्तविकता का मालूम हुआ कि वह राजा नहीं बल्कि एक भिखारी है। और वह फटे पुराने कपड़ों में लिपटा हुआ है। और उसने अभी अपने भोजन का प्रबन्ध मांगकर करना है।

प्राय: ऐसे दृश्टांत देकर आजकल के आध्यात्मिक परायण व्यक्ति इस संसार को स्वप्नमात्र कहते हैं तथा झूठा कहते हैं। और इस संसार की तुलना वे स्वप्न के संसार से करते हैं, अर्थात् जिस प्रकार जागृत अवस्था में आ जाने से हमें यह ज्ञान हो जाता है कि स्वप्न की अवस्था में हम जो कुछ देख रहे थे यह तो झूठा था। इसी प्रकार इस संसार के अन्दर जो कुछ हम देख रहे हैं वह सब-कुछ झूठ ही है, मिथ्याही है।

यदि हम इस जगत को स्वप्नमात्र ही समझ लेवें तो साधारण मानव के मन में सहज ही कई प्रश्न पैदा हो सकते हैं। पहला प्रश्न तो यह है कि यदि यह स्वप्नमात्र है तो क्या हम सोए हुए हैं क्योंकि स्वप्न हमेशा सोए हुए व्यक्ति को ही आता है। जागृत व्यक्ति को कभी स्वप्न नहीं आता। अत: यदि यह जगत स्वप्नमात्र है तो हमें यह समझना पड़ेगा कि हम सोए हुए हैं। दूसरा प्रश्न यह उठता है कि यदि हम सोए हुए हैं तो किस नींद में सोए हुए हैं, जिस नींद में हमें स्वप्न आते हैं। उस नींद का अनुभव तो मानव करता ही है तथा उस नींद से जागने के लिए हम घड़ी का अलॉर्म लगा लेते हैं। या नींद पूरी हो जाने पर स्वत: ही हमारी आंख खुल जाती है। या कोई व्यक्ति ही हमें आवाज लगाकर जगा देता है। लेकिन यह नींद कौन-सी है जिस नींद में मानव सोया हुआ है। और तीसरा प्रश्न यह है कि यदि यह संसार स्वप्नमात्र है, या झूठा है तो फिर वास्तविक सत्य संसार कौन-सा है। जैसे निद्रा से जग जाने पर हमें स्वप्न का संसार मिथ्या लगता है और वह जागृत संसार से एकदम भिन्न लगता है तो यदि यह जागृत संसार भी झूठा है तो फिर इससे भिन्न तीसरा संसार कौन सा है।

इसके अलावा हमारे मन में यह भी प्रश्न उठ सकता है कि सोनेवाला कौन है? जबकि हमारी इन्द्रियां ठीक काम कर रही हैं हमारी बुद्धि ठीक काम कर रही है। हमारी आंखें देख रही हैं, कान सुन रहे हैं, पांव चल रहे हैं तथा विवेक शक्ति भी अपना कार्य कर रही है अर्थात् भौतिक रीति से हम पूर्ण जागृत हैं फिर सोनेवाला कौन है? और इस नींद से हमें कौन जगाएगा? क्या हम स्वयं जागेंगे या कोई अन्य हमें जगाएगा और जब हम जाग जाएंगे तो हमारी अवस्था क्या होगी, हमारे विचार क्या होंगे आदि प्रश्न सहज ही इस विषय को लेकर मानव मस्तक में उत्पन्न हो सकते हैं।

प्रस्तुत लेख में इन्हीं प्रश्नों पर ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर विचार-विमर्श कर रहा हूं।

अज्ञानता की नींद

पहली बात तो यह कि क्या हम सोए हुए हैं? जब इन्सान सोया होता है तो वह अपने स्वरूप को भूला होता है। अपनी वास्तविकता से अनभिज्ञ होता है। इस समय मनुष्य की भी यही हालत है कि वह अपने-आपको भूला हुआ है। अपनी शक्तियों को,अपने गुणों को भूला हुआ है। वह अपने-आपको आत्मा न समझकर देह में ही स्थित हो गया है या यूं कहिए कि वह आत्म-विस्मृत्ति की अवस्था में है या सोया हुआ है। वास्तविकता तो यह है कि हम शरीर नहीं बल्कि इस शरीर को धारण करनेवाली आत्मा हैं। आत्मा में, सुख, शांति, पवित्रता, ज्ञान, आनंद आदि पदार्थ स्वधर्म के रूप में है ही हैं लेकिन हम स्वयं को शरीर समझकर शारीरिक सुखों के पीछे दौड़ रहे हैं। और शारीरिक पदार्थों या भौतिक पदार्थों धन-दौलत, महल, कारें, कोठियां या मान-शान आदि की प्राप्ति को ही सर्व प्राप्ति समझते हैं। इसी अज्ञानता की नींद में हम सोए हुए हैं। या दूसरे शब्दों में अज्ञान अन्धकार में पड़े हुए हैं। और यही स्वप्न ले रहे हैं कि मैं मोटी-ताज़ी देहवाला हूं, मैं धनवान हूं मेरे पास मोटर-गाड़ियां आदि ऐश्वर्य के तमाम साधन हैं। यदि कोई गरीब है तो वह स्वप्न ले रहा है कि मैं गरीब हूं मेरा शरीर दुबला-पतला है या वह

भिखारी है । वास्तव में आत्मिक दृष्टि से गरीब-अमीर में कोई फर्क नहीं, अमीर आत्मा भी वैसी ही है गरीब आत्मा भी वैसी ही है । सारांश यह कि हम अज्ञानता की नींद में सोए हुए हैं । तथा भौतिक उपलब्धियों के स्वप्न ले रहे हैं ।

तीसरा संसार नहीं तीसरी अवस्था

यदि हम यह कहें कि यह संसार स्वप्नमात्र है तो फिर सत्य संसार क्या है ? संसार तो एक ही है । यदि परिवर्तन होता है तो हमारी अवस्था में होता है । जब हम सो रहे होते हैं या स्वप्न ले रहे होते हैं तो भी हम इसी संसार में होते हैं । उस समय हमारी स्थूल कर्मेन्द्रियां व ज्ञानेन्द्रियां निष्क्रिय होती हैं । तथा हमारा मन ही अपनी कल्पना से स्वप्न की सृष्टि को रचता है और वह संकल्प भी इसी सृष्टि के ही देखे हुए दृश्यों या वस्तुओं के होते हैं । जब हम जाग जाते हैं तो भी हम इसी संसार में होते हैं । यही सूर्य वही चांद-सितारे होते हैं लेकिन फर्क इतना ही होता है कि हमारी कर्मेन्द्रियां व ज्ञानेन्द्रियां क्रियाशील होती हैं तथा मन की कल्पनाएं भी बदल जाती हैं । इसी प्रकार जब हम अज्ञानता से निकलकर ज्ञान रोशनी में आ जाते हैं तो हमारे अंदर आध्यात्मिक जागृति आ जाती है अर्थात् जब हमें यह ज्ञान हो जाता है कि हम देह नहीं बल्कि देह को धारण करनेवाली आत्मा हैं तथा इस शरीर के साथ हम इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर खेल खेलने के लिए आते हैं, जिस सुख-शांति आनंद आदि पदार्थ को हम चाहते हैं । वह हम आत्माओं का स्वधर्म ही है । बाहय जगत अर्थात् भौतिक जगत से जो सुख-शांति, आनंद आदि हम महसूस करते हैं वह क्षणभंगुर तथा नाशवान हैं अर्थात् जब हमें परमपिता परमात्मा द्वारा स्वयं का पूर्ण परिचय मिल जाता है और हम उनके द्वारा (परमपिता द्वारा) सिखाए गए योग से स्वस्थिति में स्थित होने का अभ्यास करते हैं साथ ही ईश्वरीय नियमों का पालन करते हुए विकारों और विकर्मों की मैल जो हमारी आत्मा पर चढ़ गई है उसे उतारते हैं । तो हमारी आत्मा शुद्ध होती जाती है और हम स्वस्थिति की अवस्था में आते-जाते हैं । निरंतर अभ्यास करते-करते जब हमारी आत्मा बिल्कुल शुद्ध हो जाती है तब हमें, आत्मा में जो दिव्य गुण व शक्तियां हैं उनका आभास होने लगता है । यही अवस्था आध्यात्मिक जागृति की अवस्था है या स्मृति लब्धा की अवस्था है या स्वस्थिति की अवस्था है । केवल ज्ञान सुन लेने या पढ़ लेने से हम इस अवस्था की प्राप्ति नहीं कर सकते बल्कि त्याग एवं तपस्यामय जीवन बनाकर निरंतर ज्ञान एवं योग के अभ्यास से ही हम इस अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं ।

इस अवस्था में आकर हमारे विचार परिवर्तन हो जाते हैं । जैसे स्वप्नावस्था में जो स्वप्न हम देख रहे होते हैं जग जाने पर वह वस्तुएं मिथ्या लगने लगती हैं । ठीक उसी प्रकार जब हम अज्ञान अन्धकार से निकल आते हैं तब हमें भौतिक जगत की समस्त वस्तुएं, वैभव आदि मिथ्या नज़र आने लगती हैं । हमारे समस्त विकल्प, विकार आदि समाप्त हो जाते हैं । तथा सांसारिक सुखों से बुद्धि ऊपर उठ जाती है । तथा ईश्वरीय सच्चा सुख-शांति ही हमारा सर्वस्व बन जाता है । इस विषय में आदि शंकराचार्य ने अपने ग्रंथ विवेक चूड़ामणि में इस प्रकार लिखा है ।

स्वप्नेऽर्थ शून्ये सृजति स्वशक्त्या
भोक्त्रादि विश्वं मन एवं सर्वम्
तथैव जागृत्यपि नो विशेषः
तत् सर्वमेतत् मनसो विजृम्भणाम्

अर्थः— जिसमें कोई पदार्थ नहीं होता उस स्वप्न में मन ही अपनी शक्ति से सम्पूर्ण भोक्ता-भोग्यादि प्रपंच रचता है । उसी प्रकार जागृत में भी कोई विशेषता नहीं अतः सब मन की विलासमात्र ही है ।

अनादित्वं अविधाया कार्यस्यापि तथेष्यते
उत्पन्नायां तु विधायामाविधक मनाधापि
प्रबोधे स्वप्न वत् सहमूलं विनश्यति

अर्थः— इस संसार में अविद्या तथा उसके कार्य जीव भाव का अनादित्व माना जाता है किंतु जग पड़ने पर जैसे सम्पूर्ण स्वप्न प्रपंच अपने मूल सहित नष्ट हो जाता है । उसी प्रकार ज्ञानोदय होने पर अविद्या जनित जीव भाव का नाश हो जाता है ।

व्याख्याः जो भी हमें स्वप्न आते हैं उनमें जो भी सृष्टि होती है उसमें वास्तविकता में कोई पदार्थ नहीं होता । ऐसी सृष्टि की रचना मन अपनी शक्ति के द्वारा करता है । उसी प्रकार जागृत अवस्था में भी मन अपने संकल्पों से ही जागृत सृष्टि में फंसा हुआ है । अज्ञानता से इस सृष्टि को ही सर्वस्व समझता है । यानि जब तक मानव अज्ञानता के अन्धेरे में है तब तक स्वप्न और जागृत अवस्था में कोई अंतर नहीं है । अज्ञानता के कारण ही अज्ञानता से पैदा हुई जीव भावना अर्थात् स्वयं को देह समझना और देह की सृष्टि को ही अनादि

माना जाता है । परंतु जैसे जग जाने पर सम्पूर्ण स्वप्न प्रपंच नष्ट हो जाता है । वैसे ही आत्मा का ज्ञान हो जाने पर अज्ञानता से पैदा हुआ देह का भान नष्ट हो जाता है ।

भाव यह कि यह जगत उसी हालत में स्वप्नमात्र है जबकि हम अज्ञानता की नींद में सोए हुए हैं । जग जाने पर हम इसी जगत में होंगे । लेकिन यह जगत मिथ्या या झूठा नहीं बल्कि पंच भूतों की अनादि एवं अविनाशी रचना है । यह रचना परिवर्तनशील अवश्य है । हम ऐसा नहीं कह सकते कि जिस प्रकार स्वप्न की सृष्टि का अस्तित्व ही नहीं है उसी प्रकार इस जगत का भी अस्तित्व नहीं है । इस जगत का अपना अस्तित्व है क्योंकि इस जगत में जो भी हम कार्य करते हैं उनका अच्छा या बुरा फल हमें जन्म-जन्मांतर के लिए भोगना पड़ता है । लेकिन स्वप्न में जो भी हम कर्म करते हैं उनका हमें कोई फल नहीं मिलता यह तभी हो सकता है जबकि जगत की अनश्वरता हो ।

यत् कृते स्वप्नवेलायां पुण्यं व पापमुल्वणम्
सुप्तोत्थि तस्य कि तत्स्यात् स्वर्गाय नकार्य व

अर्थ: स्वप्न के समय जो बड़े ते बड़ा पुण्य व पाप किया जाता है क्या जग पड़ने पर वह स्वर्ग व नर्क की प्राप्ति का कारण बन सकता है ?

अत: यह जगत अस्तित्व वाला है मिथ्या नहीं । स्वप्नमात्र केवल हमारे मन की अवस्था से ही है । हमें चाहिए कि हम स्वयं को ज्ञाननिष्ठ बनाकर अज्ञानता के पर्दे से बाहर आएं और जगत की वास्तविकता का अवलोकन करें तभी हमारा मानुष्य जीवन सफल हो सकता है ! □

(पृष्ठ १५ का शेष)

आरोग्य और आहार

३. मानव की लार आल्कली (Alkaline) है । उसमें कार्बोहाईड्रेट्स का पाचन करने के लिये टाईलीन (Ptyaline) होता है । परंतु मांसभक्षक प्राणियों की लार आम्लयुक्त होती है ।

४. मानव-जठर के स्त्राव मांसभक्षक प्राणियों के जठर के स्त्राव के ¼ आम्लयुक्त होता है । मांसाहारी प्राणियों के जठर के स्त्राव अति नायट्रोजन युक्त मांस पाचन करने हेतु अति आम्लयुक्त होते हैं ।

५. मांसभक्षक प्राणियों के यकृत से अति चर्बीयुक्त मांस का पाचन करने के लिये अधिक मात्रा में पित्तरस आंतों में छोड़ा जाता है ।

ऊपर किये गये विश्लेषण अनुसार, स्वास्थ्य के लिये तथा मानवता के हित के लिये शाकाहार हमें अपनाना चाहिये । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में योगाभ्यासी आत्माओं को सात्विक शाकाहार लेने की सलाह दी जाती है । यह सलाह आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक तत्वों पर आधारित है ।

कुछ लोग मांसाहार छोड़ सम्पूर्ण शाकाहारी बनने में घबराते हैं । उनको लगता है कि शाकाहार से प्रोटीन्स (Protins) कम मात्रा में मिलेंगे और शारीरिक कमज़ोरी आयेगी । अपने शरीर में दूसरे श्रेणी के प्रोटीन्स का रूपांतर प्रथम श्रेणी के प्रोटीन्स में करने की शक्ति होती है । इसलिए संपूर्ण शाकाहारी भोजन द्वारा शारीरिक कमजोरी आयेगी— यह भय मिथ्या है । बचपन से ही मांसाहार करनेवालों की पाचन प्रणाली उस प्रकार के आहार के अनुरूप होती है । फिर शाकाहारी भोजन प्रारंभ करने से ऐसे व्यक्तियों को पहले थोड़ी तकलीफ होने की संभावना होती है । फिर भी शाकाहार को न छोड़ थोड़ी तकलीफ सहन करते, उनकी पाचन प्रणाली शाकाहार के अनुरूप बन जाती है । यह अनुभव जन्य सत्य है कि शाकाहार से उत्तेजना कम होकर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है ।

□भावानुवाद: ब्र.कु. रश्मी., बम्बई

साक्षीपन की अवस्था

साक्षीपन की अवस्था अति मीठी, रमणीक और सुन्दर है । इस अवस्था पर ही भविष्य के जन्म-जन्मान्तर का आधार है । इस सृष्टि-नाटक में जो फल-भोग सामने आता है, उसे अपने पिछले कर्मों का हिसाब मानकर, वर्त्तमान में सुख रूप अवस्था में स्थित होकर उसे भोगना है । इससे भविष्य के लिये कर्म-खाता नहीं बनेगा । आप ऐसी स्थिति में रहो कि जैसे भोगने वाला आपसे कोई भिन्न है और आप उससे भिन्न हैं ।

है प्रेम जगत में सार...

□ले.-ब्र.कु. त्रिवेणी देवी पोद्दार, पुरानी बाजार, मुज़फ्फर पुर.

प्रेम शब्द ही मिस्री से भी बढ़कर मिठास लिए हुए है। प्रेम से मीठा, प्रेम से सुन्दर और प्रेम से शक्तिशाली दुनिया की कोई वस्तु है ही नहीं। जीवन का सार ही है प्रेम! प्रेम है तो सार है, संसार है नहीं तो दुनिया असार है। जीवन में अगर प्रेम पुष्प सूखा है तो जीवन वाटिका सूखी है, नीरस है, मायूस है। प्रेम से अतृप्त जीवन, जीवन नहीं बस मात्र एक जीता-जागता रेगिस्तान और सूखता-साखता उद्यान है।

प्रेम नाम है—ईश्वर का। प्रेम ही भक्ति है, प्रेम ही शक्ति है, प्रेम ही श्रद्धा है, प्रेम ही सब-कुछ है। गुरु मिला, सतगुरु से प्रेम करना सिखलाया—नाम रख दिया योग। सतगुरु मिला अपने बंदों में प्रेम उडेलने का आदेश दिया और उसका नाम रख दिया सेवा। मां पुत्र को प्यार की घूंट वात्सल्य कहकर पिलायी। बहन-भाई के प्यार को स्नेह कहकर, घरवाले अतिथि को प्यार किए सत्कार के रूप में, शिष्य गुरु को प्यार किया आदर और श्रद्धा के रूप में। प्रेम-प्यार—मानव का मानव के प्रति, ईश्वर का भक्तों के प्रति, शक्तिशाली का शक्तिहीनों के प्रति, बड़ों का छोटों के प्रति—यही है नेम—यही है धर्म, यही है देवतुल्य संस्कार। बस, प्यार बांटते चलो...प्यार...प्यार...! निरा प्यार, नि:स्वार्थ और निष्कलंक प्यार।

आधुनिक बोलचाल की भाषा ने प्रेम का अर्थ ही कुछ और ले लिया है। प्रेम नाम सुनते ही लोगों के कान फड़फड़ा उठते, गला सूखने लग पड़ता, सर में खुजली, नाक पर पसीना और आपस में फुसफुसाहट। और वह भी क्यों नहीं। प्रेम—जो अपभ्रंश बन गया है। प्रेम—जो अज्ञानता और अंधविश्वास के चक्की के बीच आ गया है। प्रेम—जो अपने अतीत और यथार्थ को भूल चुका है।

एक अच्छी भारतीय कहावत है, "जैसी दृष्टि, वैसी लंगे सृष्टि।" दृष्टि होती है तीन प्रकार की—प्रेममय, वासनामय और शरीरमय या रूपमय।

प्रेमपूर्ण निरीह नजरों से, इसी सृष्टि से इसी सृष्टि को जो देखते हैं उनकी दृष्टि, प्रेममय दृष्टि कहलाती है। उनकी नयनों में एक विलक्षण गहराई स्पष्ट दिखाई पड़ती है जिसमें लहरें उमड़ती रहती हैं करुणा, दया, सहानुभूति की। प्यार की यह निर्मल धारा शुभ-भावना और शुभ-कामना रूपी दो कछारों के बीच से गुजरती रहती है। बड़े भाग्यवान होते हैं वे भी जो ऐसे दृष्टि के स्वामी होते हैं। उनके हृदय में सर्व जीवात्माओं के लिए समभाव, प्रेम और समान आदर, सत्कार समाया होता है। उसका मूल कारण होता है कि ऐसे दृष्टि वाले,प्राणियों को अपने समान ही आत्मा समझते हैं। उनसे किंचित ही किसी को दुख मिल पाता हो। औरों को सुखी, शांत और हर्षित देख ये भी आनंदतिरेक हो उठते हैं। फलस्वरूप बिन मांगे इन्हें मान, सम्मान, इज्ज़त, मर्यादा इतना अधिक मिलने लग पड़ता कि इनके लिए सरदर्द सा हो जाता है। वास्तव में ऐसे लोग आम लोगों से काफी ऊपर उठे होते हैं और देवतुल्य होते हैं।

दूसरे प्रकार के लोगों की पलकों में चंचलता और आंखों में लालच भरा होता है। एक तरफ जहां पहले किस्म के लोग धरती पर नहीं—किसी के दिल पर राज्य करना चाहते हैं, उनमें भावना होती है, विशाल हृदय होता है और आसमान छूता पौरुष तथा विवेक, वहीं दूसरी ओर कामी व्यक्तियों के हृदय में भावना नहीं, अपितु आवेश होता है, पौरुष की जगह हीनभावना, अविवेक और असहाय वृत्ति घर किए होती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए धर्म, कर्म या शास्त्र-पुराण का कोई महत्व ही नहीं होता। ये किसी के न तो दिल पर चढ़ पाते और न ही किसी को अपने दिल पर बिठा ही सकते हैं। डर, भय और अशांति के दास ऐसे लोग कदम-कदम पर दुख ही पाते और उसका इल्ज़ाम खुदा पर थोपते। ये होते हैं स्वामी घृणा, विषाद, ईर्ष्या, जलन और चिड़चिड़ेपन के।

तीसरे नम्बर के लोग प्रथम से नीचे और दूसरे से ऊपर अर्थात् बीच के होते हैं। इनकी दृष्टि में रूप-यौवन, का स्थान होता है। सुन्दरता के पुजारी ऐसे लोग बनाव, श्रृंगार के दास होते हैं। रूप जाल में अटकना, भटकना और फिर पश्चाताप् कर माथा पटकना इनका स्वभाव होता है। इनकी दृष्टि अपेक्षाकृत विकारी कम और शारीरिक अधिक होती है। ये मायाजाल में आसानी से फंस जाते, मोह का डंक इन्हें आसानी से और बार-बार लगता रहता है। इनकी प्रवृत्ति दासवत् और गुलामवत् होती है।

अब हम पहले प्रसंग पर लौट आवें। प्रसंग था प्रेम-

सुन्दर ! सबसे सुन्दर !! अति सुन्दर !!! हम ज्ञानीजन, योगीजन एक नये समाज का, नये युग का नये लोक का सृजन करना चाहते हैं, धरती पर स्वर्ग उतारना चाहते हैं । कृष्ण को पुन: वापस भारत में लाना चाहते हैं । आखिर क्यों ? क्योंकि सब-कुछ होते हुए भी इस दुनिया में इस युग में एक चीज़ कहीं नहीं दिखाई पड़ती, कहीं नहीं मिल पाती और वह है—प्रेम ! नि:स्वार्थ प्रेम !! निहेर्तुक प्रेम !!!

आज का युग आधुनिक युग कहलाता है, फिर भी पाश्चात्य महक मौजूद है । विज्ञान और तकनीक का यह युग, एक से बढ़कर एक आविष्कार कर मानव को चकाचौंध में डाल दिया है । सभी आविष्कार मानव-कल्याण के निमित्त ही किया गया है । ये वैभवशाली इमारतें, तीव्रतर वायुयान, मशीनी मानव, वगैरह-वगैरह न जाने कितने प्रकार के आविष्कार सुख पाने के उद्देश्य से किये गये हैं । ऐसी बात नहीं कि उन आविष्कारों से सुख नहीं मिल रहा है । मिल कैसे नहीं रहा है । भला इस बात से कौन मुकर सकता है कि विज्ञान के चमत्कार हमें सुख नहीं पहुंचा रहा है । फिर भी आज विश्व भर में अशांति, भय, क्रोध और हिंसा का ताना-बाना व्याप्त है । लोग जीने से जैसे कि उब-सा गये हैं । प्राय: अच्छे-अच्छे लोगों के मुंह से भी सुनने को मिल जाता है कि "जल्दी विनाश हो", "अब मर जाना ही अच्छा है ।" मन करता है घर छोड़कर जंगल में चले जाएं । आखिर क्यूं ? ऐसे बोल का कारण ? आपसी कलह, मतभेद, भाईचारे की कमी । स्पष्ट है कि प्रेम के भूखे वर्ग कलह-क्लेश का शिकार बन जाते । छोटा तो खैर छोटा है मैं ऐसे कई बड़े घरानों को जानती हूं जहां झगड़ा है, रगड़ा है नित नये ढंग का । पूछने पर पता लगा—"मुझे और कुछ नहीं चाहिए, लेकिन मुझे इस बात का काफी दुख है कि मेरी सास मुझसे अधिक उसे प्यार करती है ।" ये बहुओं की आवाज होती है । पति-पत्नी के बीच एक ही शिकायत—प्रेम नहीं । बाप-बेटा या अन्य दूसरे सम्बंधी के साथ भी यही बात है—प्रेम की कमी ।

सच तो यह है कि आज के भौतिकवादी, विज्ञानवादी और तर्कवादी युग में सब-कुछ खरीदा जा सकता है, सब-कुछ पाया जा सकता है, किंतु प्रेम और भाईचारा शायद ही किसी महाभाग्यवान को प्राप्त हो ।

आज एक तरफ विनाशकारी युद्ध की तैयारियों पर अरबों-खरबों खर्च किया जा रहा है, तो दूसरे तरफ शांति पाने के लिए माथापच्ची किया जा रहा है । आखिर अशांति का कारण ? यही विनाशकारी बुद्धि, सम्भावित खतरा । सवाल है युद्ध अच्छा या प्यार ? अवश्य युद्ध से अच्छा प्यार है । तो युद्ध को कैसे रोका जाय ?

विज्ञान के नियमानुसार समान ध्रुवों में विकर्षण (Repulsion) और असमान ध्रुवों में आकर्षण (Attraction) निश्चित है ।

किसी छड़-चुम्बक के विपरीत और समान सिरे को पास लाकर इस नियम की जांच हर कोई चाहे तो कर सकता है । विपरीत के प्रति आकर्षण भाव प्रकृति प्रदत्त है और संसार की हर निकायों पर यह लागू होता है ।

गर्म लोहा, ठंडा लोहा से ही काटा जा सकता है । फिर युद्ध को प्रेम-प्यार से ही सुलटा जा सकता है—युद्ध से नहीं !

प्रकृति के सर्व नियमों में सुन्दर और श्रेष्ठ नियम है—आकर्षण-विकर्षण का नियम (Law of attraction and Repulsion) या कहें राग-विराग का नियम या और आगे बढ़कर कह सकते हैं योग वियोग का नियम । एक तरफ आकर्षण या राग या योग होगा तभी, जब दूसरे तरफ विकर्षण, विराग (वैराग्य) या वियोग होगा; किंतु यह होगा विपरीत ध्रुवों के साथ ही । चाहे सतयुग-कलियुग के बीच राग-विराग हो, या पुरानी दुनिया-नयी दुनिया के बीच आकर्षण-विकर्षण हो या फिर परमात्मा और मनुष्यात्माओं के बीच योग वियोग हो । स्पष्टत: युद्ध से वैराग्य तब उठेगा जब वह कहीं प्रेम से जकड़ा हुआ हो । प्रेमी कभी युद्ध नहीं चाहेगा ।

युद्ध करने में तो खर्चा होता है—शक्ति, संपत्ति और समय; किंतु प्रेम में न तो कौड़ी लगे न छेदाम, और खर्च के बजाय बचत है—समय, शक्ति और संपत्ति की । परमात्मा परमधाम से धरती पर क्यों आया है ? सिर्फ प्रेम करने, प्रेम सिखाने, प्रेम लुटाने । प्रेम--सर्व-सम्बंधों और सर्व-रसों का । □□□

गोवा (कुडचडे): स्वर्ण जयंति तथा शांति वर्ष के उपलक्ष्य में रखे गये सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेते हुए प्राध्यापक भ्राता नारायण लाड, डॉ. व्यंकटेश काकोड़ तथा ब्रह्माकुमारी बहनें ।

सहजज्ञान तथा राजयोग द्वारा सच्चे स्वराज्य की प्राप्ति

यों तो एक दृष्टिकोण से हर एक मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है । परन्तु मनुष्य जो कर्म करता है, फिर उनके बन्धन में तो बँध ही जाता है । इसलिए कहा गया है कि मनुष्य कर्म भोगने में परतन्त्र है । इसी प्रकार, यद्यपि भारतवासियों ने विदेशी शासकों को निकाल बाहर किया और राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त की परन्तु भारत सरकार अथवा यहाँ की जनता जो कर्म करती है, उन भोग्य अथवा प्रारब्ध कर्मों में तो यह बँध जाती है । अर्थात्, उसे भोगने में तो यह परतन्त्र ही है । वास्तव में तो जो व्यक्ति अथवा राष्ट्र कर्म करने अथवा शासन की नीति (policy) निर्धारित करने में जितना स्वतन्त्र है, उतना ही अधिक उसके ऊपर ज़िम्मेदारी भी है कि वह ठीक कार्य करे वरना उसे अपने ही किए कर्मों का बन्ध शीघ्र ही बाँध लेता है ।

अब यदि देखा जाय तो भले ही भारत ने राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली है और उसे अपना संविधान (Constitution) बनाने की, अपनी पालिसी बनाने की तथा प्रशासनिक स्वतंत्रता भी प्राप्त हो गई है परन्तु परतन्त्रता का जो मूल कारण था, उसका उन्मूलन अब तक नहीं हुआ है । पहले यह देश, यहाँ के लोगों के पारस्परिक मत-भेदों, आपसी फूट और लड़ाई-झगड़ों, धार्मिक आडम्बरों और अन्ध-विश्वासों तथा राजाओं की विलासता और प्रजा के आलस्य एवं असंगठित होने के फलस्वरूप ही तो परतन्त्र हुआ था और इसने अपना राज्य-भाग्य, मान और शान, धर्म और ईमान, स्वर्ण और धन-धान्य को गँवाया था । और, हम देखते हैं कि यहाँ के लोगों में पारस्परिक फूट, भाषा-भेद, धार्मिक क्षेत्र में अन्ध श्रद्धा, जीवन में आलस्य, असहिष्णुता और आडम्बर, धनवानों के जीवन में विलासता आदि तो आज भी बने ही हुए हैं । स्वार्थ और लूट-खसूट का बाज़ार और बनिया वृत्ति तथा मार-काट का बाज़ार तो अभ भी गरम है । अर्थात्, माया या विकारों की कड़ी एवं मोटी-मोटी जंज़ीरों में तो यह आज भी बँधा है । इस देश के कन्धों पर विकारों का जूआ तो अभी तक भी है । अतः परतन्त्रता के मौलिक कारण का निवारण तो अभी तक नहीं हुआ और सरकार तथा प्रजा सभी मानते हैं कि आज यहाँ भ्रष्टाचार का बोलबाला है ।

आज कौन है जो छाती पर हाथ ठोक कर यह कह सके कि उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, प्रमाद आदि विकारों में से किसी की बेड़ियाँ या हथकड़ियाँ नहीं पड़ी हुई ? कोई साधु, कोई सन्त, कोई भूतपूर्व राजा या वर्तमान मन्त्री, कोई नेता या अभिनेता, कोई प्रजा या राज्यपाल-नगरपाल ऐसा हो जो इस माया रूपी रावण की कैद के बाहर हो तो ज़रा बताये । कोई हर प्रकार के दुःखों एवं क्लेशों से स्थाई रूप से मुक्त हो चुका हो तो ज़रा आवाज़ लगाये ।

अतः स्वतंत्रता लेने के प्रयत्नों के पीछे बापू गाँधी की यह जो शुभ इच्छा थी कि यहाँ रामराज्य हो, उस इच्छा को तो आज भारतवासियों ने धूल में मिला दिया है । वे महात्मा गाँधी की समाधि पर तो फूल चढ़ाते हैं परन्तु अपने खोटे कर्मों से, अपने भ्रष्टाचार से और अपने दुर्व्यवहार तथा दुराचार से तो उसकी आत्मा को मानो शूल लगाते हैं । **यहाँ रामराज्य की बजाय हराम राज्य स्थापन हो गया है, यहाँ या तो बहुत लोग हराम की कमाई खाते हैं और या सभी काम-क्रोधादि हराम करते हैं, यहाँ राम के नाम-लेवा बेशक होंगे परन्तु उनके आचरण पर तो रावण ही का कण्ट्रोल है । यहां गेहूँ पर तथा चीनी पर तो सरकार का कण्ट्रोल है परन्तु सभी की मनसा, वाचा, कर्मणा पर तो रावण ही का कण्ट्रोल है ।**

यहाँ समय पर वर्षा क्यों नहीं होती, बाढ़ आकर अनाज को क्यों नष्ट कर देती है ? अरे, आज परिश्रम से हम अनाज उगाते हैं और प्राकृतिक आपदायें आकर उन्हें नष्ट कर देती हैं ? आज हम देश की उन्नति की बाते सोचते हैं और कुछ कदम बढ़ाते हैं और कल चीन और पाकिस्तान हमारे घर में घुसने की कोशिश करते हैं ।

माया के बन्धनों से स्वतन्त्रता प्राप्त करने की चेष्टा न होने के कारण सरकार यहाँ करोड़ों रूपये

योजनाओं पर खर्च कर रही है **वहां चारित्रिक शिक्षा अथवा अध्यात्मिक विद्या के प्रोत्साहन के लिए सरकार के खज़ाने से एक नया पैसा भी खर्च नहीं होता।**

यही कारण है कि विभिन्न प्रदेशों के मुख्यमन्त्री आपस में सीमा-बन्दी की समस्या को लेकर झगड़ते हैं, विधान सभा के सदस्य तथा संसदसदस्य आपस में विरोध, वैर, वैमनस्य और विस्फोट की बातें करते हैं। भगवान् कहते हैं कि मुझ निराकार परमात्मा से विपरीत होने के कारण सभी लड़ते-झगड़ते रहते हैं, सभी अनाथ हैं और सुख-शान्ति के ईश्वरीय वरसे से वञ्चित हैं।

अतः अब हमें चाहिये कि हम इस माया अथवा रावण के जुए (Yoke) से मुक्त हों, हम वास्तविक अर्थ से स्वतन्त्रता अथवा स्वराज्य (आत्मा का राज्य)प्राप्त करें और इसके लिए ईश्वरीय ज्ञान की धारणा तथा सहज राजयोग का अभ्यास करें। अब जबकि पाण्डवपति निराकार परमपिता परमात्मा शिव प्रजापित ब्रहमा द्वारा सच्चे दैवी स्वराज्य अथवा श्रीनारायण के अटल, अखण्ड, निर्विघ्न एवं सुख-शान्ति सम्पन्न राज्य की २१ जन्मों या २५०० वर्षों के लिए स्थापना कर रहे हैं तो हम भी श्रेष्ठाचारी बनकर उस शुभ कार्य में निमित्त बनें ! इससे हम भी उस दैवी स्वराज्य में सम्पूर्ण सुख-शान्ति का भाग्य प्राप्त करेंगे।

इन्दौर: 'राजनीति में सेवा भाव' विषय पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए भ्राता अजीत जोगी, साथ में ब्रह्माकुमारी विमला, ब्र.कु. ओमप्रकाश जी तथा ब्रह्माकुमारी राधा बहन।

ग्वालियर: नवदुर्गा चैतन्य झांकी का उद्घाटन करते समय महापौर भ्राता माऊ साहब जी तथा साथ में समाज-सेवक भ्राता भगवान दास जी लहरिया तथा ब्रह्माकुमारी बहनें तथा भाई खड़े है।

मचिलीपाटनम: 'समाज सेवा' विषय पर भाषण करते डॉ. गिरीश पटेल जी। मंच पर रोटरी, लॉयन्स तथा जेसी क्लाबों के अध्यक्ष बैठे हुए है।

हम देवी-देवता बनेंगे ...!

□ब्र.कु. विद्याभूषण, सुभाषनगर., भोपाल

जहां मनुष्य अशांत है, मानसिक रूप से तनावग्रस्त है, परेशान है, आसानी से इस बात को अनुभव नहीं कर सकता कि देवी-देवता बनने का पुरुषार्थ भी किया जाता है ।

हमारे पास तीन प्रकार का जीवन है । एक है आज का विकारी जीवन, दूसरा है दैवी गुण धारण करनेवाला पुरुषार्थी जीवन और तीसरा है देवी-देवताओं का जीवन ।

पहले हम देवी-देवताओं की महिमा बताएंगे । उनकी महिमा में कहते हैं—वे सम्पूर्ण निर्विकारी, सोलह कला संपूर्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम, संपूर्ण अहिंसक श्रेष्ठ आत्माएं थे । ऐसा चित्रों में वर्णित है ।

दूसरा है विकारी जीवन । आज मनुष्य देवी-देवताओं के मंदिर में जाकर अपने पतित-विकारी जीवन का वर्णन करते कि हम नीच, खल, कपटी, कामी हैं ।

तीसरा है कर्म के श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं का जीवन । हमारे भविष्य का जीवन सामने है । हम देवी-देवताओं की महिमा ही नहीं करते वरन् उनके समान महिमावान और गुणवान बनने का पुरुषार्थ करते हैं । अभी हमारा पुरुषार्थी जीवन है ।

देवी-देवताओं के सर्वांगों की तुलना कमल पुष्प से करते । कमल पुष्प न्यारा और प्यारापन का प्रतीक है । कमल प्रवृत्ति मार्ग का प्रतीक है । प्रवृत्ति के लिये नर-नारी चाहिए । देवताओं का जीवन निर्विकारी था । इस समय स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा शिव जो कि सर्व आत्माओं के परमपिता हैं, ईश्वरीय ज्ञान एवं योग के आधार से हमारा जीवन ऐसा बना रहे हैं । हम इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर रहे हैं । यह प्रत्यक्ष अनुभव है, परिकल्पना नहीं ।

देवी-देवताओं को सदा वरदानी रूप में दिखाते, दाता के रूप में । इस समय हम आत्माएं परमात्मा से जो दिव्य ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं, उनका निरंतर सर्व आत्माओं को दान करते रहते । देवी-देवताओं को इन्द्रियजीत, प्रकृति जीत कहते हैं । और इस समय के तमोप्रधान वातावरण में, तमोप्रधान जीवन में हम सतोप्रधान बन रहे हैं । देवी-देवताओं को शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण कराते आए । हम भी ऐसा ही पवित्र भोजन करते हैं । ऐसे शुद्ध वातावरण का हमने निर्माण किया है । अनुभव के आगे इतिहास व कल्पना सब निरर्थक रह जाते हैं । हज़ारों आत्माएं इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से इन बातों को अपने जीवन में धारण कर अनुभव कर रही हैं । इसीलिए हम दावे से कहते हैं कि हम देवी-देवता बनेंगे । इसमें कोई शक नहीं । संस्कार-स्वभाव सब-कुछ हमने परिवर्तन किया है एवं बहुत आगे सीमा तक पहुंच गए हैं । जब अनेकों आत्माएं ऐसी स्थिति तक पहुंच जाएंगी तो क्यों स्वर्ग न आएगा । आज विश्व के अधिकांश आत्माओं के संस्कार तमोगुणी हैं । वे बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, शराब आदि-आदि आदतों से मजबूर हैं साथ ही व्यर्थ एवं साधारण संकल्प, वाणी, एवं कर्म के वशीभूत हैं । हम आत्माएं घोर कलियुगी वातावरण में ही अपने जीवन को निर्विकारी दृष्टि, वृत्ति व कृति को पवित्र व श्रेष्ठ पारिवारिक जीवन में रहकर बना रही हैं । इससे देवी-देवता बननेवाली स्वर्ग की अधिकारी आत्माएं स्वत: अलग हो जाती हैं । तीनों प्रकार के जीवन को समानांतर रूप में देखने से अनुभव होगा । हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं कि देवी-देवताओं में ये गुण थे और हम इस समय उन्हें धारण कर रहे हैं । निश्चित है जब ऐसे गंदे, तमोप्रधान वातावरण में रहकर हमने अपनी कर्मेन्द्रियों पर विजय पायी है एवं पूर्णत: विजय पाने के पुरुषार्थी हैं तो सतयुगी सतोप्रधान वातावरण में तो स्वत: कर्मेन्द्रिय जीत, प्रकृति जीत रहेंगे ।

प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम से परमात्मा के दिव्य महावाक्यों, ज्ञानरत्नों को सुनकर, धारण कर राजयोग की शक्तियों से हमने पुराने खोटे-संस्कारों को परिवर्तन कर नए श्रेष्ठ संस्कार धारण किये हैं ।

विभिन्न धर्म, जाति, भाषा व देश की हज़ारों-लाखों आत्माओं ने अपने संस्कारों को पवित्र बनाया है । वर्तमान जीवन श्रेष्ठ है तो भविष्य तो श्रेष्ठ होगा ही । इस जीवन में हमने महान, श्रेष्ठ कर्मों का बीज बोया है, इससे भविष्य की उज्ज्वलता को आंका जा सकता है । जैसे धन, पद या सौन्दर्य से सम्पन्न व्यक्ति को देखकर कहते हैं कि इसने पिछले जन्म में ज़रूर कोई महान या पुण्य का कार्य किया होगा । जैसा बीज बोएंगे, वैसा फल प्राप्त कर सकेंगे । हमने स्वयं पांच विकारों को परिवर्तन किया है तथा उन्हें सहयोगी (मित्र) बनाया है जैसे—काम को परिवर्तन कर शुभ-भावना और शुभ-कामना । इसी प्रकार हजारों आत्माएं इस ईश्वरीय

विश्वविद्यालय के माध्यम से ऐसा परिवर्तन कर रही हैं।

हमने परमात्मा से दिव्य गुण एवं शक्तियां ली हैं, साथ-ही-साथ औरों को भी देते जा रहे हैं। निःस्वार्थ देनेवाले ही देवता बनेंगे। देने से खुशी मिलती तथा दूसरों का आशीर्वाद मिलता। लेते परमात्मा से और देते विश्व को। हम तन-मन-धन, समय, संकल्प, शक्ति परमात्मा पर न्यौछावर कर फिर मानव आत्माओं के कल्याण में लगाकर, दानी-वरदानी बनते जा रहे हैं।

भले आत्मा नहीं दिखाई पड़ती किन्तु हमने आत्म-बल एवं परमात्म-बल से उसका अनुभव किया है एवं आत्माभिमानी बनने के पुरुषार्थी हैं। जो इन्द्रियजीत, मायाजीत बनते, ऐसी साधना करते और अन्य आत्माओं से कराते हैं, उन्हीं के लिए परमात्मा सतयुगी दैवी सृष्टि की रचना कर रहे हैं। जब जन्म-मरण के चक्कर में आते-आते हम आत्माएं तमोप्रधान व विकारी बन जाते तब परमात्मा दिव्य ईश्वरीय ज्ञान, योग शक्ति देकर हमें श्रेष्ठ बनाते हैं। हम कर्म के ब्राह्मण हैं, ब्रह्मा मुखवंशावली संतान हैं। मुख से नहीं निकले किंतु ब्रह्मा मुखकमल से परमात्म ज्ञान को सुनकर एवं समझकर ब्रह्मा के बच्चे बने व ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी कहलाने के अधिकारी बने।

हम देवी-देवता बनेंगे—ऐसा वही बोल सकते जिसने ऐसा जीवन में परिवर्तन लाया होगा। जो परमात्मा को सब-कुछ अर्पण कर ट्रस्टी नहीं बना वह ऐसा बोल नहीं सकता। यह समय सारे कल्प की तुलना में हीरे-तुल्य समय है। समय अभी है—तकदीर की लकीर को जितना चाहें बढ़ा सकते हैं या मिटा सकते हैं। जैसा हम परिवर्तन करेंगे, जितने हमारे संस्कार महान होंगे, उतना ही हम सबको परिवर्तन कर पाएंगे। सतयुग की खेती का समय अभी चल रहा है।

इस ज्ञान से एक धर्म एवं एक राज्य की स्थापना हो रही है। सतयुगी प्रशासन भी अभी हम सीख रहे हैं। इसके लिए पहले हम स्वयं पर अर्थात् स्व की कर्मेन्द्रियों पर शासन करना सीख रहे हैं। नेतृत्व की शक्ति उसी में होगी, जो स्वयं त्यागी, तपस्वी होगा। नींद, आलस्य, अलबेलापन आदि का त्याग चाहिए। प्रकृति की बाधाओं, कठिनाइयों पर भी अचल-अडोल रहने की शक्ति चाहिए।

हम स्वयं अनुभव कर रहे हैं तथा अन्यों को भी ज्ञान, योग व जीवन में महान एवं दिव्य परिवर्तन के प्रत्यक्ष स्वरूप से अनुभव करा रहे हैं।

इस प्रकार हम स्वयं दावे से कह सकते हैं कि हम देवी-देवता बनेंगे एवं पवित्र देवी-देवताओं की पावन सतयुगी, स्वर्गीय दुनिया के मालिक बनेंगे। □

फलौदी (जोधपुर): चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का भूतपूर्व विधायक उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनों एवं कुमारों के साथ।

नारनौल: प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डिप्टी कमिश्नर भ्राता एस.सी. चौधरी, भ्राता जयसिंह जी एस.एस.पी. तथा भ्राता एम.एल. शर्मा जी साथ खड़े हैं।

'पवित्र बन, योगी बन'

मां भारती पुकारती

□ब्र.कु. आत्मप्रकाश., आबू पर्वत

पात्र-परिचय

अजीत— 23 वर्षीय देशभक्त नवयुवक
धर्मपाल— मनोज का मित्र, जवाहरी का पुत्र
प्रेमनाथ— अजीत का बड़ा भाई
सूरजमल— अजीत के पिता जी
जेलर—
मनोज— क्लॉस-वन ऑफिसर
सुंदरी— धर्मपाल की पत्नी
सुरेखा— अजीत की छोटी बहन
सब-इंस्पेक्टर— बंदूकधारी सिपाही रणवीर सिंह

''प्रथम-दृश्य''

(अजीत, मनोज और धर्मपाल तीनों एक ही वर्ष में एम.एस.सी. की परीक्षा पास करते हैं और अपने-अपने व्यवसाय में लग जाते हैं। मनोज धर्मपाल का अजीत से भी घनिष्ट मित्र है। मनोज अपने कमरे में अखबार पढ़ने में व्यस्त है, अजीत मनोज के कमरे में प्रवेश करता है।)

अजीत (हल्के लहजे से)—हैलो मनोज... कौन-सा समाचार पढ़ रहे हो?

मनोज (अचरज से)—अरे कौन! अजीत भैया... आइए विराजिए...

अजीत—क्या है आज का समाचार...?

मनोज (लम्बी श्वास लेते हुए)—समाचार तो वही हैं पापाचार और अत्याचार के! सचमुच अजीत भैया, इतिहास भी गवाही देता है कि एक समय था जबकि यह भारत मां स्वछन्द रूप से मुस्कराती थी। उसकी गोद में सुन्दर-सा सुनहरा स्वर्ग रूपी बगीचा था जिसमें राम, कृष्ण, लक्ष्मण और भरत जैसे सुगंधित तथा सुशोभित चेतन फूल खिलते थे। चहुं ओर सुख-शांति प्रेम की धारा बहती थी और आज...

अजीत—और आज भारतीय-संस्कृति विषाक्त हो चुकी है। यह कैसी विडम्बना है कि उसकी गोद में पलनेवाले बच्चे मर्यादाओं को तोड़कर राक्षसी प्रवृत्तियों से अत्याचार, दुराचार को बढ़ाकर पापों का बोझ बढ़ा रहे हैं। वह ऐसे बच्चों को गोद में लेते लज्जा रही है।

मनोज—अजीत भैया, जब तक मानव के घोर अंधियारे मन में आध्यात्मिकता की किरण जागृत नहीं होगी, तब तक समाज परिवर्तन के स्वप्न निष्फल हैं। और यह उच्चतम सेवा आप जैसे महान समाज-सुधारक ही कर सकते हैं। हर मन में सच्चाई का बीज बोने जैसा और कोई महान कार्य नहीं है।

अजीत—(गंभीरता से)—मनोज, मेरा भी यही ध्येय है कि सत्यनिष्ट मार्ग पर चलकर अपना सर्वस्व भारत मां की सेवा में अर्पण करूं। अच्छा, मैं चलता हूं मनोज, मुझे जरूरी काम से जल्दी जाना है।

(मनोज के कमरे से अजीत का प्रस्थान, धर्मपाल का आगमन)

धर्मपाल—(कुटिल मुस्कान से)—मनोज, क्या अजीत आपके पास आया था?

मनोज—हां, काफी देर तक हमारी आपस में चर्चा चलती रही।

धर्मपाल—किस बात पर चर्चा चली?

मनोज—यही कि भारत की सुसंस्कृति की पुनरावृत्ति कैसे हो, समाज का सुधार कैसे हो? और अजीत ने आजीवन देश-सेवा करने की शुभेच्छा व्यक्त की।

धर्मपाल—(खिन्नता से) अच्छा... ये धूर्त, पाखंडी क्या देश की सेवा करेगा?

मनोज—भैया, अजीत के ऊंचे आदर्श से तो सभी उससे प्यार करते हैं और आप क्यों प्रतिकार करते हो?

धर्मपाल—(क्रोध से)—मनोज, चाहे कुछ भी हो, अजीत को शांति से जीने नहीं दूंगा। कॉलेज में पढ़ते समय जो भरी सभा में उसने मुझपर कलंक लगाया था, उसका बदला मैं लेकर ही रहूंगा। चाहे मुझे मेरी सारी जायदाद भी लुटानी पड़े, तो भी मैं पीछे नहीं हटूंगा। मरते दम तक उसका पीछा नहीं छोड़ूंगा।

मनोज—(शांत भाव से)—भैया, आप ऐसा अशुभ क्यों

सोचते हो? बदला लेना क्या अच्छी बात है? बदला लेनेवाला व्यक्ति तो एक दिन सभी की नज़रों से सदा के लिए गिर जाता है।

धर्मपाल—अच्छी बात हो या न हो, मैं उसे मजा चखाकर ही रहूंगा। अच्छा मनोज, मैं चलता हूं, तुम्हारी भाभी इन्तज़ार करती होगी।

(धर्मपाल घर चला जाता है।)

(पर्दा गिरता है)

''दृश्य-दूसरा''

(अभी भी धर्मपाल के मन में बदले की ज्वाला धधक रही थी, अजीत को फंसाने अर्थ युक्ति ढूंढ़ने के लिए सोच में डूबा हुआ अपने कमरे में बैठा है)

धर्मपाल—(धीरे से)—अरे सुन्दरी... जरा इधर तो आओ...अजीत मेरा परमहितैषी है... उसे मुझे जवाहरात का हार उपहार भेजना है... ऐसे वह स्वीकार नहीं करता है...तुम ही उसे पहुंचा सकोगी क्योंकि उसकी बहन सुरेखा तुम्हारी तो सखी है...

सुन्दरी—(हर्ष से)—हां...हां... क्यों नहीं...!

धर्मपाल—तो ये लो हीरों का हार, छोटी पेटी में डालकर कोई बहाना करके अजीत के कमरे में चुपचाप रखकर आओ।

सुन्दरी—(अचरज से)—इतना ऊंचा हार उपहार में दे रहे हो?

धर्मपाल—(उदारता से)—अजीत भी तो बड़ा आदमी है, तुम चिन्ता नहीं करो, इसे पहुंचाकर आओ।

(सुन्दरी सुरेखा के घर चली जाती है।)

सुन्दरी (घर में प्रवेश करते हुए)—सुरेखा बहन...कैसी हो..?

सुरेखा (आश्चर्य से)—अरे सुन्दरी बहन... अचानक कैसे आना हुआ आपका...?

सुरेखा—सोचा, बहुत दिनों से आपसे मुलाकात नहीं हुई, इसलिए मिलने आई... अजीत भैया कहां गये हैं...?

सुरेखा—भैया तो बाहर गांव गये हैं...कल सुबह तक आ जायेंगे...

सुन्दरी...अजीत भैया का कमरा क्या यह है? कितना सुन्दर कमरा है...बहन मुझे बहुत प्यास लगी है... जरा पानी तो पिलाओ...

(सुरेखा पानी लाने जाती है, इतने में सुन्दरी वह उपहार चुपके-से कमरे के एक कोने में रख देती है।)

सुरेखा (पानी देते हुए)—लो बहन... पानी पियो...

सुन्दरी (पानी पीते हुए)—बहन, क्या प्रेमनाथ भैया ऑफिस से वापस नहीं आये हैं?

सुरेखा—बस, अभी आनेवाले ही हैं...

सुन्दरी—अच्छा तो बहन, मैं चलती हूं, घर में बहुत काम पड़ा है...

(सुन्दरी घर जाती है और प्रेमनाथ अपने घर पहुंचता है।)

धर्मपाल—(सुन्दरी को देखते ही)—अरे सुन्दरी...उपहार पहुंचाकर इतनी जल्दी आई हो... सचमुच तुम बहुत होशियार हो...

सुन्दरी—हां, आपका काम पूरा करके आई हूं।

(दूसरे ही दिन धर्मपाल पुलिस-थाने में जाकर अजीत पर हीरे का हार चुराने का आरोप लगाता है, पुलिस अजीत के कमरे की तलाशी लेती है और हार मिलने पर अजीत को ३ साल के लिए जेल की सजा देते हैं, यह घटना विद्युत-गति से सारे शहर में फैल जाती है।)

सुन्दरी—(घर में धर्मपाल से)—मुझे क्या पता आप उस उपहार को अपहार बनाकर अजीत भैया को धोखा देंगे, वरना ऐसा काम मैं कभी नहीं करती।

धर्मपाल—(झल्लाकर)—चुप रहो सुन्दरी, तुम नादान हो...तुझे क्या पता यह अजीत कैसा है... जब तक मैं अजीत के खानदान को नहीं मिटाऊंगा तब तक मेरे दिल को सच्ची शांति नहीं मिलेगी...

सुन्दरी—(दर्दीले स्वर से)—हाय राम... कैसा पत्थर दिल है आपका...!

(धर्मपाल के बोल सुनकर सुन्दरी के हृदय का तार झनझना उठा।)

(पर्दा गिरता है)

''दृश्य-तीसरा''

(६ मास के बाद एक दिन रात के १२ बजे धर्मपाल शराब का प्याला चढ़ाकर, पिस्तौल जेब में रखकर अनर्गल बातें करता हुआ प्रेमनाथ के घर का दरवाज़ा खटखटाता है।)

प्रेमनाथ—(करवट बदलते हुए)—कौन...कौन है...?

धर्मपाल—(लड़खड़ाते बोल से)—मैं अ...अजीत हूं... दरवाज़ा खोलो...

प्रेमनाथ (दरवाज़ा खोलते हुए)—हाय... धोखेबाज़ धर्मपाल तुम...क्या अजीत को जेल भेजने के बाद भी तुझे चैन नहीं मिला...

धर्मपाल — (गोली मारते हुए) कैसे मिलेगा चैन...?

(आवाज़ के कारण सुरेखा और सूरजमल दोनों हड़बड़ाकर उठते हैं ।)

सुरेखा (धर्मपाल को डंडा मारते हुए)—हाय भगवान... बचाओ इस राक्षस से...

(शराब के नशे में झूमता हुआ धर्मपाल वहीं बेहोश होकर गिर पड़ता है ।).

सूरजमल—(फोन का डॉयल घुमाकर)—हैलो पुलिस... खतरा है... तुरंत शहीद चौक के पास 'अजीत भवन' में चले आओ...

(बंदूकधारी सिपाही सहित सब-इंस्पेक्टर रणवीर सिंह वहां पहुंचते हैं ।)

सुरेखा (रोते हुए)—सब-इंस्पेक्टर साहब, इस पापी ने मेरे भैया के प्राण लिए...

(आवश्यक जांच के बाद धर्मपाल को दोषी पाते हैं, होश में आते ही उसे पकड़कर ले जाते हैं और आजीवन जेल की सज़ा देते हैं ।)

धर्मपाल—(पश्चाताप से रोते हुए)—सच कहा था मनोज ने कि "बदला लेनेवाला व्यक्ति एक दिन सबकी नज़रों से सदा के लिए गिर जाता है", उसे एक दिन एक वर्ष जैसे लग रहा था ।

(सप्ताहान्त में स्वतंत्रता दिन के पहले एक दिन धर्मपाल अरोखा स्वप्न देखता है ।)

स्वप्न में—आंखों के सामने भारतमाता देवी रूप में खड़ी थी, और असहनीय बोझ के दुख से वह फूट-फूटकर रो रही थी और कह रही थी...

भारत मां की यही है पुकार, बन्द करो अब ये पापाचार ।
छोड़कर ये ज़हरीले विकार, करो अपने कर्मों में सुधार ।।
शांतिदूत बनकर सबकी, शांति की प्यास बुझाओ तुम ।
ईर्ष्या द्वेष की अग्नि में जलते, मानव पर शीतलता बरसाओ तुम ।
प्रेम की गंगा बहाने लिए, बन जाओ तुम प्रेम के अवतार ।
भारत मां की यही है पुकार, बंद करो अब ये पापाचार ।।
बनकर पवित्रता के सेनानी, माया को मार भगाओ ।
स्वतंत्रता का झण्डा फहराने, रावण की गुलामी मिटाओ ।।
दिव्य गुणों को धारण करके, धरती पर लाओ स्वर्ग उतार ।
भारत मां की यही है पुकार, बन्द करो अब ये पापाचार ।।

भारत मां के यह करुणामय स्वर सुनकर धर्मपाल का हृदय भर आया, भावावेश के कारण रोते-रोते उसके मुंह से सिसकी निकल आई । इतने में उसकी नींद खुल गई ।)

धर्मपाल—(अपराधी भाव से)—मां...हे धरती मां...मैं आपका कृतघ्न हूं...मैं अपने कर्मों को सुधार, पापों के बोझ से आपको ज़रूर हल्का करूंगा ।

(पर्दा गिरता है)

''दृश्य-चौथा

शहर में कुछ ही समय पहले ब्रह्माकुमारी आश्रम खुला था, जिसमें मनोज नियमित रूप से जाता रहा । उसने सुरेखा को भी उस आश्रम से परिचित कराया था । सुरेखा ने ब्रह्माकुमारी बनकर समर्पित जीवन ईश्वरीय सेवार्थ अपनाया था । योगाभ्यास से उसका चेहरा दिव्य गुणों से सुशोभित और स्वाभिमान से दीप्त था ।

(रक्षा बंधन त्यौहार के दिन जेलर की स्वीकृति से मनोज जेल में राखी के प्रोग्राम का आयोजन करता है । ब्रह्माकुमार मनोज और ब्रह्माकुमारी सुरेखा राखी बांधने तथा परमात्मा का संदेश देने जेल में जाते हैं । वहां के बड़े हॉल में कैदियों की सभा लगी हुई है ।)

जेलर (फूलों के गुलदस्तों से)—दोनों का स्वागत करके रंगमंच पर बिठाता है ।

जेलर जगपाल—आज का दिन हमारे सौभाग्य का दिन है, जो हमारे पास मेहमान पधारे हैं । आज देश के उत्थान के लिए आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता है । आप सभी की ओर से हम दीदी सुरेखा जी से प्रार्थना करते हैं कि हमें कुछ प्रकाश की किरणें दें ।

ब्रह्माकुमारी सुरेखा—परमपिता परमात्मा की संतानों, मेरे अलौकिक भाइयों ! हर वर्ष प्रमाण आप सभी ने तीन दिन पहले स्वतंत्रता दिन का महान पर्व मनाया, लेकिन भौतिक रूप से भारत स्वतंत्र होते हुए भी मायामय विकारों की जंजीरें अभी भी मानवीय सिर पर लटकी हैं । सारा संसार ही विकारों की जेल में फंतक रहा है ।

बापू गांधी जी की रामराज्य स्थापन करने की जो आश थी, उसे पूरा करने के लिए विश्व के बापू परमपिता परमात्मा शिव वर्तमान समय इस धरा पर अवतरित हुए हैं । उनकी आज्ञा है—''**पवित्र बनो, योगी बनो ।**''

भारत मां की भी जो पुकार है कि, हे मेरे लॉडलो—''अब ये अत्याचार, पापाचार बंद करो'', इसे भी साकार करने के लिए हमें पवित्रता की राखी बांधनी होगी ।

हां, तो आइए भाइयो, आज आपकी बहन आपको राखी बांधते हुए एक दान भी मांगती है, और वह यह है कि इन पांच खोटे पैसों रूपी विकारों को सदा-सर्वदा के लिए अपनी बहन को दान में दे दो ।

(फिर सुरेखा बहन क्रमशः राखी बांधते हुए सभी से दान में बुराइयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा कराती है ।)

धर्मपाल की राखी बंधवाने की बारी आती है ।

धर्मपाल—(भावावेश से)—दौड़कर सुरेखा बहन के चरणों में गिर जाता है ।

धर्मपाल रो रहे थे... उनके गर्म अश्रु-कणों से बहन के चरण भीगे जा रहे थे...

सुरेखा—(उठाते हुए बोली)—धर्मपाल भैया...ये क्या कर रहे हो...परन्तु धर्मपाल कुछ न बोले... इस समय सिवाए पश्चाताप् के, वेदना के उनके पास कुछ न था...

(चारों ओर सन्नाटा छा गया)

सुरेखा—(स्नेह भरी दृष्टि से)—धर्मपाल के कलाई पर राखी बांधती है ।

धर्मपाल—बहन, आज मेरे जीवन की गति बदल गई । इस धरती मां पर स्वतंत्रता का झण्डा फहराने, पहले मैं अपने मन में पवित्रता का झण्डा फहराने की प्रतिज्ञा करता हूं और **''पवित्र बन, योगी बन, मां भारती पुकारती''** यह संदेश जन-जन तक पहुंचाने हेतु अपना जीवन बलिदान करता हूं । सचमुच सुरेखा बहन, आपने मेरे भाग्य की रेखाएं बदल दीं ।

सुरेखा—(धीरे प्रशांत स्वर से)—भैया, मैंने नहीं, उस भाग्य-विधाता परमात्मा ने...

(धर्मपाल राखी बांधने के बाद अजीत से विनम्र-भाव से मिलता है ।)

धर्मपाल—(क्षमा मांगते हुए)—भैया, मुझे माफ कर दो...

(ऐसा कहते ही धर्मपाल की आंखों से आंसुओं की गंगा-जमुना बहने लगी ।)

अजीत—(आत्म विभोर होकर)—आपके मन में जागृत हुई देश प्रेम की भावना को देखकर आज मेरे हृदय में आनंद की नदियां उमड़ रही हैं...यदि ऐसे सभी वास्तविक धर्म का पालन करनेवाले धर्मपाल बन जायेंगे, इस धरा पर जल्दी ही स्वर्ग उतर आयेगा...

जेल में ही ब्रह्माकुमार मनोज की मदद से धर्मपाल और अजीत ज्ञान अर्जन करते हैं और धर्म उनके वाणी में ही नहीं, बल्कि कर्म में साकार देखकर कारागार अधीक्षक दोनों को ही कारावास से मुक्त कर देता है ।

तदन्तर दोनों भाई ब्रह्माकुमारी आश्रम के नियमित विद्यार्थी बनते हैं और अपने तथा भारतमाता के वर्तमान को सुखद और भविष्य को उज्ज्वल बनाने की सेवा में जुट जाते हैं । □

(पर्दा गिरता है)

अहंकार

□ब्र.कु. विश्वमित्र, छतरपुर., (म.प्र.)

बचपन में अपने गांव में एक कहावत सुना करते थे कि ''लंका में बावन गज़ से कोई कम न था ।'' सोचा करते थे कि शायद वहां सभी लोग भारी डील-डौल वाले होते होंगे तथा उनकी बहुत ज्यादा ऊंचाई होती होगी । लेकिन अब जबसे ईश्वरीय ज्ञान मिला है तो परमात्मा शिव ने अनेक रहस्यों को उजागर किया है । बाबा ने बताया है कि आज सारी सृष्टि पर रावण का राज्य है तथा यह पूरी दुनिया ही लंका है जो कि चारों ओर से पानी से घिरी हुई है । तो अब जबकि हम बाबा के कहने के अनुसार इस आध्यात्मिक रहस्य को जान गये हैं तो फिर प्रश्न उठा करता था कि बचपन में जो कहावत सुना करते थे कि 'लंका में बावन गज़ से कोई कम न था' इसका क्या अर्थ होगा ?

लंका को हम रावण की नगरी मानते थे, और रावण के बारे में यह सर्वविदित है कि उसमें अहंकार बहुत था । वह अपने अहंकार के कारण ही राम से लड़ा और अपना सर्वनाश करा दिया । ठीक इसी प्रकार आज की इस लंका में हम चाहे किसी से मिलें या बात करें तो वह अपने धन का, पद का, शरीर का, वस्तुओं का, वैभव का, प्रभाव का बहुत ही बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करता है और इसकी हरेक बात—मैं ऐसा हूं, मैं वैसा हूं, मैंने यह किया, मैंने वह किया, मैं ऐसा करूंगा, मैं वैसा करूंगा...आदि । इतना वर्णन करता है कि लगने लगता है कि कितना अहंकार है । जबकि सतयुगी-त्रेतायुगी देवी-देवताओं की तुलना में जिनमें कि प्राकृतिक सुंदरता थी, निरोगी कंचन काया थी, अपार धन था, हीरे-जवाहरों के महल थे किसी भी वस्तु की कोई कमी नहीं थी, किसी भी प्रकार का दुख नहीं था आदि के सामने आज व्यक्ति व वैभव नगण्य है । फिर भी आज के लोगों में इतना अधिक अहंकार देखकर लगता है कि वास्तव में हम लंका में रह रहे हैं और सभी देहाभिमानी लोग लंकावासी हैं जो स्वयं को बावन गज़ से कम नहीं समझते । यही तो रावण का प्रत्यक्ष प्रभाव देखने में आ रहा है । जिसके कारण लोग प्रभु को या उनके ज्ञान को हंसी में उड़ा देते हैं और अपना पाण्डित्य बघारने लगते हैं । अब तो विश्व को देखकर यह लगता है कि रावण का पूरा प्रभाव छाया है और वह राम परमात्मा से टक्कर ले रहा है जिससे कि उसका अपने दल-बल समेत सर्वनाश हो जायेगा । □

कटाक्ष

□ब्र.कु. राजेंद्र लाल., उज्जैन

शीर्षक पढ़कर कृपया चौंकिये मत, क्योंकि मैं आपके ऊपर कोई कटाक्ष नहीं कर रहा हूं। केवल कटाक्ष के बारे में कुछ बता रहा हूं। क्योंकि एक ओर जहां टकराव बहुत ही भयंकर बीमारी का नाम है, वहीं दूसरी ओर कटाक्ष, टकराव रूपी बीमारी का एक प्रारंभिक लक्षण है। कटाक्ष होते ही समझ लीजिए कि आगे-पीछे कहीं-न-कहीं से टकराव रूपी बीमारी का वार होनेवाला है। कटाक्ष अच्छे-अच्छे समझदार, ज्ञानी और बुद्धिमान व्यक्तियों में भी 'मनमुटाव' एवं 'टकराव' पैदा करने की क्षमता रखता है। कटाक्ष की मौजूदगी में आप किसी भी प्रकार की उन्नति की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

आप नज़र उठाकर अपने चारों ओर ध्यान तो दीजिए। आपको तुरंत कटाक्ष की स्थिति का आभास होगा। आप देखेंगे... आप महसूस करेंगे कि कटाक्ष किये जा रहे हैं... कटाक्ष सुने जा रहे हैं... कटाक्ष सहे जा रहे हैं...कटाक्ष से मनमुटाव पैदा हो रहे हैं...कटाक्ष से टकराव पैदा हो रहे हैं। यही नहीं बल्कि कटाक्ष कई प्रकार के प्रश्न चिन्हों को भी जन्म दे रहे हैं। कटाक्ष का अंतिम परिणाम क्या होता है, यह मुझे यहां लिखने की आवश्यकता प्रतीत नहीं हो रही है।

कटाक्ष कई रूपों में किये जाते हैं। यह कटाक्ष करनेवालों की (अ) समझदारी पर निर्भर करता है कि वह किस रूप में कटाक्ष करते हैं। कई बार तो कटाक्ष इतने शालीन रूप में किये जाते हैं कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती कि यह कटाक्ष किया गया है? इसके विपरीत कई बार कुछ बेहूदे तरीके से भी कटाक्ष किये जाते हैं कि सुनते ही समझदार एवं ज्ञानी भी अपना संतुलन खो बैठते हैं। कटाक्ष से टकराव अथवा मनमुटाव तभी पैदा होते हैं, जब कटाक्ष एक तो बेहूदे तरीके से किया गया हो या उस कटाक्ष के द्वारा गहरा मानसिक आघात पहुंचा हो अथवा स्वाभिमान या भावनाओं को ठेस लगी हो। यदि कटाक्ष निराधार रूप में किया गया हो, तो उसे सामान्यतः सरलता से हज़म किया जाना मुश्किल होता है।

कटाक्ष एक प्रकार की सज़ा के समान है, जो न चाहते हुए भी कटाक्ष से पीड़ित व्यक्ति को भुगतनी पड़ती है। कटाक्ष किस कदर मानसिक आघात एवं ठेस पहुंचाता है—यह तो वही जानता है, जिसने कटाक्ष सुने हैं या कटाक्ष सहे हैं। एक ओर जहां कटाक्ष सुननेवालों को तो उक्त मानसिक यंत्रणा से गुजरना पड़ता है, लेकिन दूसरी ओर कटाक्ष करनेवाले अपने आपको बहुत ही बुद्धिमान समझकर कटाक्ष करने में आंतरिक खुशी महसूस करते हैं तथा सोचते हैं कि वे अपने (सामान्य) ज्ञान की परिपक्वता दर्शा रहे हैं।

लेकिन शायद कटाक्ष करनेवाले यह भूल जाते हैं कि कटाक्ष करना बुद्धिमानी अथवा समझदारी का परिचायक नहीं है, अपितु कटाक्ष से तो कटाक्ष-कर्ताओं की 'संकीर्ण मानसिकता' का ही आभास होता है। कटाक्ष करने में ज्ञान अथवा परिपक्वता नहीं, बल्कि 'ओछापन' झलकता है। कटाक्ष करनेवाले शायद यह नहीं सोच पाते हैं कि आनेवाले कल में उन्हें भी कटाक्ष की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। हास्यास्पद स्थिति तब होती है, जब कटाक्ष करनेवालों के साथ 'उल्टे बांस बरेली को लदनेवाली' कहावत चरितार्थ हो जाती है।

कटाक्ष-कर्ताओं का ध्यान जब उसके द्वारा किये गये कटाक्ष की ओर आकर्षित किया जाता है, तो वे यह कहकर अपनी सफाई पेश करते हैं कि हमने तो मज़ाक किया था या कि कटाक्ष करने के पीछे हमारी कोई दुर्भावना नहीं थी। लेकिन दूसरों को कटाक्ष के द्वारा मानसिक आघात पहुंचाकर अथवा उनकी भावनाओं या स्वाभिमान को ठेस पहुंचाकर मज़ाक किया जाना कहां तक न्यायोचित है अर्थात् दूसरों की लाश पर रोटी सेकना किसी भी दृष्टि से उपयुक्त नहीं है। दूसरी बात यदि कटाक्ष के पीछे कोई दुर्भावना नहीं रहती है, तो क्या सद्भावना रहती है? लेकिन यदि सद्भावना होती तो शायद कटाक्ष का जन्म ही नहीं होता। इस प्रकार कटाक्ष उनकी कथित सद्भावना पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है।

अंत में केवल इतना ही कि कटाक्ष करना समझदारी अथवा बुद्धिमता नहीं है। यह हमारी सामान्य मर्यादाओं के प्रतिकूल है। यदि हम अभी भी अनुमानों के आधार पर 'संकीर्ण मानसिकता' के शिकार हैं, तो यह हमारी आध्यात्मिक शिक्षाओं की विशालता पर एक धब्बा है। अतः हमें औसत समझदारी का प्रदर्शन करते हुए, ज्ञान की मर्यादा एवं विशालता के अनुकूल आचरण करते हुए, दिव्य गुणों को दृष्टिगत रखते हुए कटाक्ष को जन्म देनेवाली, ईर्ष्या, द्वेष अथवा हीनता की भावनाओं को दफन कर देना चाहिये तथा संकीर्ण मानसिकता को समाप्त कर सहयोगात्मक रुख अपनाकर समय के जो कदम सम्पूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं, उन कदमों के साथ कदम मिलाकर चलने का संकल्प करना चाहिये। □

आध्यात्मिक सेवा-समाचार

□ब्र.कु. सत्यनारायण तथा ब्र.कु. लक्ष्मण,
कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा संकलन

सम्बलपुर: सेवाकेंद्र से समाचार मिला है कि बलागिर जिला हेड क्वार्टर पर ''विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी'' का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में मुख्य अतिथि के रूप में ए.डी.एम. भ्राता सरोज कुमार प्रधान तथा सम्मानीय अतिथि के रूप में ए.डी.एम.ओ. भ्राता कमलाकांत दास पधारे थे। इस अवसर पर वीडियो और प्रोजेक्टर शो का आयोजन भी किया गया। लगभग ४०० भाई-बहनों ने राजयोग शिविर और ज्ञान शिविर से लाभ उठाया। □

दुर्ग: स्वर्ण जयंति वर्ष के उपलक्ष्य में दुर्ग में शांति यात्रा एवं विश्व शांति आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन महापौर श्री शंकरलाल ताम्रकार ने दीप प्रज्वलित करके किया। शांति यात्रा शहर के करीब ८-१० कि.मी. का चक्कर लगाती हुई सम्पन्न हुई। रात्रि में ६ बजे से कृषि उपज मंडी के प्रांगण में विश्व शांति आध्यात्मिक सम्मेलन में वक्ताओं के प्रवचन हुए। राजयोग फिल्म प्रदर्शन का कार्यक्रम भी रखा गया। इन प्रोगामों से हजारों आत्माओं को लाभ हुआ। □

कटक: उड़ीसा राज्य में रथ यात्रा जगह-जगह घूमधाम से निकाली जाती है। इस अवसर पर कटक शहर में एक दिन के लिए भक्तों की प्यास बुझाने के लिए परमपिता परमात्मा का सच्चे रथ ब्रह्मा बाबा का सही परिचय देने हेतु शांति पथ प्रदर्शनी लगायी गयी जिससे बहुत लोगों ने लाभ उठाया। कियोंझर शहर में रथ यात्रा के अवसर पर ५ दिन के लिए ''विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी'' लगायी गयी। ५०-६० गांव के भक्त आत्माओं को सच्चे जगन्नाथ और भाग्यशाली रथ का परिचय मिल गया। □

रांची: समाचार मिला है कि रांची सेवाकेंद्र की ओर से रथ यात्रा के शुभ अवसर पर दो दिवसीय ''शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी'' लगायी गयी। मेला देखनेवाले दो लाख दर्शानार्थियों में से १२००० भक्तों ने ''शिव दर्शन प्रदर्शनी'' बहुत ही रूचि से देखी एवं अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा ली। अनेक आत्माओं ने सेवाकेंद्र पर आने की जिज्ञासा जाहिर की। □

पठानकोट: समाचार मिला है वकलोह (हि.प्र.) में पीर-बाबा लखदाता के मंदिर की विशाल और खुली ग्राउंड में 'विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' लगाई गयी। पीर-बाबा लखदाता के मेले में लगी प्रदर्शनी को चार हजार आत्माओं ने देखकर लाभ उठाया। गोरखा रेजीमेंट, राजपूत रेजीमेंट के फेमिली क्वार्टर में बहिनों को प्रवचनों के लिए बुलाया। वकलोह कैंट (हि.प्र.) में सेवाकेंद्र खोलने का निमंत्रण भी मिला। □

नागपुर: सेवाकेंद्र के भाई-बहनों ने अखिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों को ईश्वरीय दिव्य संदेश दिया। भारत के सम्पूर्ण स्वतंत्रता संग्राम सैनिकों का ८वां अधिवेशन यशवंत स्टेडियम में रखा गया था। इस अधिवेशन में १० हजार सैनिकों ने भाग लिया। इस अधिवेशन के प्रांगण में ''शांति प्रदर्शनी'' लगाने की स्वीकृति मिली। स्टेडियम के भीतर बहुत ही सुन्दर श्रीकृष्ण की झांकी के साथ प्रदर्शनी सजाई गयी थी। इस अनोखी प्रदर्शनी को देखकर सभी सैनिक बहुत खुश हुए। □

मिर्जापुर (उ.प्र.): सेवाकेंद्र की ओर से स्वर्ण जयंति के उपलक्ष्य में एक विश्व शांति साइकिल यात्रा का आयोजन किया गया। यह यात्रा मिर्जापुर सेवाकेंद्र से सिंगरौली (म.प्र.) में समाप्त हुई। इस साइकिल यात्रा में दस भाई तथा पांच बहनें सम्मिलित थे। बहनें साथ-साथ बस द्वारा चलती थीं। आस-पास के सभी गांवों में प्रदर्शनी, भाषण तथा प्रोजेक्टर शो के माध्यम से सभी ग्रामीण जनता को ईश्वरीय संदेश दिया गया। अनेक गांवों के ग्राम-प्रधानों ने यात्रियों का भव्य स्वागत किया। और उन्हें ''विश्व शांति'' के लिए शुभ आशीर्वाद दिए। इसी बीच कुछ मुख्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की भी अच्छी सेवा हुई, जिसमें चुर्क सीमेंट फैक्टरी के जी.एम. भारत के सुप्रसिद्ध थर्मल पावर ओबरा के जनरल मैनेजर, ओबरा के डी.जी.एम. आदि सम्मिलित हैं। □

कोचीन: सेवाकेंद्र का द्वितीय वार्षिकोत्सव विश्व शांति यात्रा और विश्व शांति सम्मेलन के रूप में मनाया गया। शांति यात्रा में लगभग २०० भाई-बहनों ने बैंड-बाजे के साथ नगर की परिक्रमा की। सर्वोच्च कोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश वी.आर. कृष्णअय्यर ने सम्मेलन का उद्घाटन किया।

उन्होंने कहा कि "आज विश्व परमाणु-बम आदि से भरा हुआ है और सत्यनाश के निकट पहुंच गया है।" इसलिए विश्व में शांति की बहुत जरूरत है। ब्रह्माकुमारी बहनें इसी शांति के कार्य में लगी हुई हैं आप सभी लोगों को पूरा सहयोग देना है। □

मेरठ: समाचार मिला है कि आस-पास के करीब ८-१० गांवों की अच्छी सेवा हुई है। वहां पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी द्वारा कई हजार आत्माओं को शांति का संदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त लक्ष्मीनारायण की धर्मशाला सदर, शिव मंदिर नयी देवपुरी व सरधना तहसील में वीडियो द्वारा राजयोग फिल्म व हरिद्वार कुम्भ दर्शन शांति मेले की फिल्म दिखाकर हजारों आत्माओं को परमात्मा का परिचय व संदेश दिया गया। □

भुवनेश्वर: बालेश्वर सेवाकेंद्र के सहयोग से बालेश्वर के निकटस्थ कुलि ग्राम में ३ दिवसीय विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी लगाई गयी जिससे छह हजार आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला तथा ५५ व्यक्तियों ने योग शिविर में भाग लिया तथा ईश्वरीय विद्यार्थी बने। एक शांति मार्च निकालकर ग्राम की परिक्रमा की गयी। प्रतिदिन सायंकाल प्रवचन तथा प्रोजेक्टर शो द्वारा जनसमूह को दिव्य जीवन बिताने की प्रेरणा दी गयी। □

फरीदाबाद: सेवाकेंद्र की ओर से नारनोल में चार दिन के लिए विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन डिप्टी कमिश्नर भ्राता एस.सी. चौधरी जिला महेन्द्रगढ़ ने आकर किया। उनके साथ कई ऑफिसर्स भी आये। नारनोल के प्रशासनाधिकारी भ्राता संगवान जी, भ्राता एम.एल. शर्मा जी, भ्राता जयसिंह भी आये और उन्होंने प्रदर्शनी देखकर बहुत प्रशंसा की। प्रदर्शनी का विशेष आकर्षण चैतन्य देवियों की झांकी थी। राजयोग शिविर का भी प्रबंध किया गया था। साप्ताहिक कोर्स भी वहां कराया गया। अब रेगुलर क्लॉस चल रही हैं। □

भोपाल: सेवाकेंद्र की ओर से साप्ताहिक प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन "राजयोग भवन" में किया गया। प्रतिदिन २ घंटे के संक्षिप्त समय में साप्ताहिक पाठ्यक्रम एवं व्यावहारिक विषयों पर प्रवचन एवं अंत में नित नवीन महाशिवरात्रि, विश्व शांति आदि नाटकों का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम को जनसमूह ने काफी पसन्द किया। लगभग ३०० की जनता ने नित्य आकर कार्यक्रम का लाभ लिया। इसी भांति भोपाल की कोटरा सुल्तानाबाद स्थित शाखा में भी प्रदर्शनी से लगभग ५०० आत्माओं ने लाभ लिया। □

आगरा: जून के मास में एशिया की प्रसिद्ध रिफॉयनरी 'बाद', के दोनों रेलवे-स्टेशनों 'बाद' (बड़ी लाइन, मध्य रेलवे) एवं भैंसा (छोटी लाइन पूर्वोत्तर रेलवे) में भी त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगायी गई। इस प्रदर्शनी द्वारा रेलवे कर्मचारियों एवं साथ-साथ यात्री जनता ने बहुत लाभ उठाया। कितने ही मुसलमान भाई भी प्रभावित हुए। लगभग ५०० आत्माओं ने ज्ञान लाभ लिया। और भविष्य में जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लिया। □

बीकानेर: स्थानीय श्री लक्ष्मीनाथ जी के मंदिर के प्रांगण में निर्जला एकादशी के पुण्य पर्व पर नव-विश्व आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। अपार जनसमूह के बीच ब्र.कु. बहनों के प्रवचन हुए। तथा सभी को प्रदर्शनी दिखलायी गयी। अनेक आत्माओं ने इस आयोजन से लाभ उठाया। विशेष कर माताओं और कन्याओं ने लाभ उठाया। □

वेरावल सेवाकेंद्र द्वारा एक "स्वर्ण युग आध्यात्मिक मेला" का आयोजन किया गया। इस मेला का उद्घाटन गुजरात राज्य के कृषिमंत्री के हस्तों सम्पन्न हुआ। माउंट आबू से आयी हुई दादी रत्नमोहिनी जी के हस्तों से शिव ध्वज लहराया गया। राजयोग शिविर का उद्घाटन वेरावल के वैष्णव सम्प्रदाय के महाराज १०८ श्री चन्दबाण जी मुरलीधर जी के कर कमल से हुआ। "स्वर्ग" तथा "सर्व आत्माओं के पिता" की चैतन्य दिव्य झांकी एक विशाल शांति यात्रा के रूप में निकाली गयी। मेला के समारोह में अतिथि के रूप में वेरावल के भ्राता अहमद भाई बलोच व ई.रे.क. के वाइस प्रेसीडैन्ट भ्राता मालू जी उपस्थित थे। इस मेला से कई हजार आत्माओं ने लाभ उठाया। □

मुलुंड कॉलोनी (बम्बई): सेवाकेंद्र द्वारा शास्त्रीनगर में दो दिन के लिए प्रदर्शनी रखी गयी। इस प्रदर्शनी के द्वारा एक हजार आत्माओं ने शिवबाबा का परिचय प्राप्त किया। इसके अलावा लोनावला सेवाकेंद्र की ओर से नगरपालिका के महात्मा गांधी सभागृह में तीन दिन के लिए सुबह और शाम शांति प्रदर्शनी लगायी गयी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर-पालिका के तत्कालीन उपाध्यक्ष भ्राता बी.डी. जाधव ने

किया। इस प्रदर्शनी से पांच हजार आत्माओं ने लाभ लिया। □

ऊधमपुर: बिलावर राजयोग सेवाकेंद्रों के संयुक्त सहयोग से ऊधमपुर जिले के पवर्तीय स्थानों की ईश्वरीय सेवा में दो शिव दर्शन प्रदर्शनियां की गईं जिनमें हजारों आत्माओं ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया। इनमें से एक प्रदर्शनी सुद्धमहादेव नामक धार्मिक स्थान पर आयोजित की गयी तथा दूसरी प्रदर्शनी 'लाटी' गांव में की गयी। गांव की हिंदू व मुस्लिम जनता ने संयुक्त रूप से निवेदन किया कि यहां भी अपनी एक शाखा खोलो। वहां ईश्वरीय सेवा आरम्भ हो गई है। □

मैसूर—हुणसूर (कर्नाटक): में स्वर्ण महोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर न्यायमूर्ति इन्द्रकुमार जी ने अपने उद्गार प्रगट करते हुए कहा कि अगर इस दुनिया में कोई महान कार्य करती है तो केवल इस महान संस्था का नाम लिया जाता है। इस अवसर पर शांति यात्रा द्वारा हजारों लोगों को ईश्वरीय संदेश दिया गया। इसके अलावा विराजपेट, सोमवारपेट में आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा हजारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया। □

नडियाड: खेड़ा जिला के मुख्य केन्द्र नडियाड में ईश्वरीय विश्वविद्यालय का नया मकान जिसका उद्घाटन राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के हस्त कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। सारे गुजरात के ब्राह्मण वत्स और नडियाड के गणमान्य व्यक्ति पधारे। दादी जी के द्वारा मकान के बगीचे में शिवबाबा के झण्डे को लहराया और दीपमाला को प्रज्वलित करके 'शिव दर्शन' भवन का उद्घाटन किया। नडियाड के सुप्रसिद्ध संतराम मंदिर के महन्त नारायणदास महाराज की मुलाकात दादी प्रकाशमणि जी से हुई। उनको विद्यालय की गतिविधियों से अवगत कराया। इसके अलावा नडियाड नागरिक समिति के आयोजकों के निमंत्रण पर सर्व धर्म सम्मेलन में ब्र.कु. बहनों के प्रवचन हुए। अन्य स्थानों पर वीडियो-शो राजयोग फिल्म इत्यादि दिखाई गई। □□□

भगवान कब आते हैं

छा जाते हैं जब सृष्टि पर जुल्म के बादल
जब हर घर परिवार के अन्दर मचती कलकल
भीख मांगते फिरे नहीं मिलता जब अनजल
पापों के जब बोझ से होती दुनिया व्याकुल

तब वत्सों को ले जाने निज लोक के पथ पर
आप पिता शिव आते हैं ब्रह्मा के रथ पर

हो अभिमानी जब प्राणी विस्मृति को पाते
क्रोद्ध ज्वाला में जल-जल कर स्वाहा हो जाते
मोह लोभ की दलदल में जब सब गड़ जाते
काम अग्नि में तप कर जब सब जन घबराते

शीतल कमल बनाने भोला नाथ पधारें
आओ आओ वत्सों बाहें खोल पुकारें

जब रूहें सब परम धाम से हैं आ जाती
जब दुःखों के भार तले व्याकुल हो जाती
मिथ्या शास्त्र ज्ञान सुनें सुन कर अपनाती
सन्यासी बन साधू सन्त गुरु कहलाती

कल्प पूर्व की गीता शिव दोहराने आते
सहज ज्ञान और सहज योग का भेद बताते

देश के राजा के सिर पर जब ताज ही न हो
बात ताज की छोड़ो जब महाराज ही न हो
सिवा विकर्मों के पुरुषों को काज ही न हो
माताओं के हृदय में जब लाज ही न हो

तब शूद्र से ब्राह्मण शिव आ आप बनाते
दो युग का दे राज डबल सिरताज पहनाते
चलना अपने वतन संभल जाओ अब खट से
बांध सफर सामान कमाई कर लो झट से

सौदा ले लो जल्दी सौदागर की हट से
बेड़ा चलने वाला भव सागर के तट से

प्रीतम वारिस को तो शिव खुद पार उतारें
लावारिस को धर्मराज बन डन्डे मारें।

प्रीतमलाल अश्क
पश्चिम विहार—नई दिल्ली

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, सम्पादक, ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशांति प्रेस कृष्णानगर, दिल्ली-५१ से छपवाया। Regd No. 10563/65-D, (E)—70